गवर्नमेन्ट संस्कृत कालेज बनारस की
प्रथमा परीक्षा में निर्धारित
पाठ्यक्रम के अनुसार

सामाजिक शास्त्र-भाग २

भूगोल

प्रकाशक
मोतीलाल बनारसीदास
पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस ।

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

१६-९-८६

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय, वाराणसी।

पाठ्यक्रम के अनुसार।

सामाजिक-शास्त्र—भाग दूसरा

भूगोल
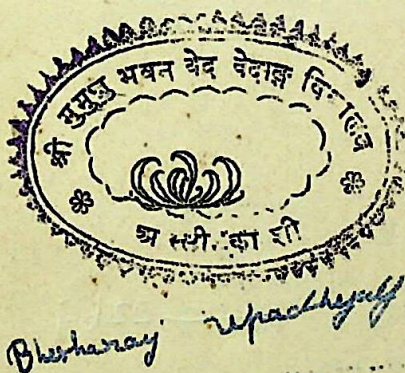
प्रकाशक

मोतीलाल बनारसीदास

पो० ब० नं० ७५

नेपालीखपरा, बनारस

सन् १९५५] [मूल्य ।-) आना

प्रकाशक
सुन्दरलाल जैन,
मैनेजिंग प्रोप्राइटर,
मोतीलाल बनारसीदास
नेपालीखपरा, बनारस।

मुद्रक
शान्तीलाल जैन
जैनेन्द्र प्रेस,
नेपालीखपरा, बनारस।

सामाजिक-शास्त्र—भाग २

भारत का भूगोल

भूगोल और इतिहास का सम्बन्ध

मनुष्य तथा उसका वातावरण मानव इतिहास की दो महान शक्तियाँ हैं। उनके सम्बन्ध को जो विद्या अध्ययन करावे उसे भूगोल कहते हैं। भूगोल के द्वारा संसार के भिन्न-भिन्न पदार्थ, जीव जन्तु तथा देश की स्थिति का ज्ञान सुलभ हो जाता है। उससे मनुष्य, वनस्पति, उद्भिज पदार्थ तथा प्रकृति आदि के कार्यों का उचित अनुसंधान तथा विवेचना करने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है।

किसी देश की प्राकृतिक अवस्था और उसके इतिहास में घना सम्बन्ध है। मनुष्य का आहार विहार, वेशभूषा, आचार विचार उस देश की प्राकृतिक दशा जलवायु आदि पर निर्भर होता है। उसकी राजनैतिक सामाजिक तथा धार्मिक प्रवृत्तियाँ विशेष भौगोलिक परिस्थिति में उत्पन्न होती हैं और उनका विकास भी उसी पर निर्भर है। यह सच है कि मनुष्य अपनी इच्छा-शक्ति से प्रकृति को अपने अनुकुल बना लेता है तथा प्राकृतिक कठिनाइयों के ऊपर भी उठ जाता है, पर वह भौगोलिक परिस्थिति का निर्माण नहीं कर सकता। प्राकृतिक साधन उसको प्रकृति ही देती है। इस प्रकार प्रकृति और मनुष्य के परस्पर सहयोग और विरोध से ही इतिहास का निर्माण होता है।

भारत की प्राकृतिक अवस्था ने उसके इतिहास पर गहरा प्रभाव डाला है। एक विद्वान का मत है "संसार के किसी देश की भौगोलिक स्थिति ने वहाँ के इतिहास तथा लोगों के भाग्य का निर्णय उतना नहीं किया है जितना भारत के।" दूसरे के अनुसार भूगोल

भारत पर पूर्णरूप से शासन करता है। हमारे देश के उत्तर पश्चिम तथा उत्तर पूर्व में स्थित ऊँचे हिमालय ने भारत को चीन तथा मध्य एशिया से अलग कर दिया है। इसी कारण इन देशों की जनता में उतना संपर्क न हो सका। उत्तर सीमा पर हिमालय एक प्रहरी का काम करता है। अनेक आक्रमणों से इसने हमारी रक्षा की और एक स्थायी संस्कृति के विकास में हमारी मदद की हैं। हिमालय के कारण ही हमारी ऋतुयें बदलती हैं और उत्तरी भारत की नदियाँ निकलकर उस भाग को उपजाऊ बनाती हैं। उसके न रहने से कदाचित् यह पूरा भाग मरुभूमि होता और एक भी नदी न होती। उत्तर-पश्चिम के हिमालय में दर्रे होने के कारण बाहरी शत्रु सिकन्दर, शक, हूण, मुसलमान सभी उसी मार्ग से आए। उत्तर पश्चिम की रक्षा की समस्या हमारे देश के शासकों पर हमेशा बनी रही है। भारत की असली सीमा इन दर्रों के पार अफगानिस्तान के निकट है। एक बार शत्रु को इन दर्रों के निकट आने के पश्चात् उनको रोकना कठिन है। मौर्य सम्राटों ने इसका महत्त्व समझकर इसकी रक्षा की। दिल्ली सम्राटों के लिये उत्तर पश्चिम सदाही एक समस्या रही है। इन दर्रों के आस-पास का इलाका पहाड़ी है। यहाँ के निवासी पैदावार तथा और वस्तुओं के लिये मैदान के लोगों पर निर्भर रहते हैं। भौगोलिक स्थिति के कारण इनको दबाकर रखना अत्यन्त ही कठिन है। अतएव यहाँ के निवासी हर शासक के लिये एक समस्या रहे हैं।

हिमालय से उतरते ही उत्तर का बड़ा हरा भरा मैदान मिलता है। इस भाग की जलवायु स्वास्थ्य वर्धक है और भूमि उपजाऊ है। समतल तथा उपजाऊ होने के कारण इन्हीं भागों के लिये आपस में युद्ध हुए। पंजाब में उत्तर पश्चिम से शत्रुओं का सदा भय था। इस कारण गंगा प्रदेश में ही बड़े साम्राज्यों-मौर्य, गुप्त, मुगल इत्यादि की स्थापना हुई। सिंध तथा गंगा प्रदेश को थार की मरुभूमि अलग करती है। उत्तरी भागों में इन दोनों भागों का एक पतला भू-भाग मिलता है। यह कुरुक्षेत्र है, जहाँ भारत के भाग्य का निपटारा कितनी

ही बार हुआ है। नदियों की ही सहायता से साम्राज्यों के शासन सम्बन्धी विभाजन हुआ करते हैं। उत्तरी मैदान बहुत बड़ा है और नदियों से भरा है। उपजाऊ भूमि होने के कारण लोगों को जीविका के लिये अधिक समय नहीं व्यतीत करना पड़ता था। इस अवकाश में लोगों ने साहित्य कला तथा अन्य सांस्कृतिक उन्नति की। यह भाग सभ्यता का केन्द्र है।

राजपूताना तथा थार की मरुभूमि

थार की मरुभूमि के कारण आक्रमणकारी इन भागों पर आक्रमण करने से डरते थे तथा प्रयास को ही व्यर्थ समझते थे। वे पंजाब से कुरुक्षेत्र होते सीधे गंगा के मैदान में आ जाते थे। मुसलिम आक्रमणों के पश्चात् बहुत से राजपूत इन्हीं भागों में आ गये तथा उन्होंने यहाँ अपने राज्यों की स्थापना की। दिल्ली के निकट होने के कारण वहाँ के सम्राटों को इनसे सदा भय बना रहता था। यही कारण था कि दिल्ली तथा यहाँ के शासकों में सर्वदा संघर्ष चलता रहता था। अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण ही राजपूत अपनी रक्षा कर सके। महाराणा प्रताप का तथा मुगल साम्राज्य का संघर्ष इसका प्रमाण है। भौगोलिक स्थिति के कारण ही अनेक आक्रमण होने पर भी राजपूतों का नाश न हो सका।

विन्ध्य पर्वतमाला

इन्हीं पर्वत मालाओं के कारण उत्तरी तथा दक्षिणी भारत की राजनैतिक एकता में कठिनाइयाँ पड़ती रहती हैं। उत्तर में बड़े-बड़े साम्राज्य बने तो दक्षिण में भी राज्यों की स्थापना हुई। उत्तर के शासक शक्तिशाली होने पर दक्षिण विजय को प्रस्थान करते थे। दक्षिण से भी उत्तर में हमले हुए हैं, जैसे मराठों के, परन्तु ये कम थे। इन पर्वतों, जंगलों तथा नदियों ने मिलकर मध्य भारत में कुछ ऐसे भाग बना दिये हैं जहाँ स्वतन्त्र राज्य रहे। उन्होंने सदा उत्तर

तथा दक्षिण के शत्रुओं से अपनी रक्षा की है। इन नदियों तथा पर्वतों ने यहाँ की भाषा वेशभूषा खान-पान को काफी प्रभावित किया है। मुसलमान आक्रमणकारी प्रारम्भ में इन्हीं पहाड़ियों के कारण दक्षिण में न जा सके और आज भी दक्षिण में अच्छे-अच्छे मंदिर हैं।

दक्षिण का पठार

विन्ध्यपर्वत माला के दक्षिण में एक त्रिकोण पठार है। यह पूर्वी तथा पश्चिमी घाटों के बीच में है। पश्चिमी घाट से निकलकर नदियाँ इस पठार से होती हुई पूर्वी घाट को काटती बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। यह भूमि कपास के लिये अच्छी है। इस पठार को इसमें बहने वाली नदियों ने कई भागों में विभाजित कर दिया है, जिनमें महाराष्ट्र तेलंगाना तथा उड़ीसा मुख्य हैं। इन भागों की भाषा भिन्न है। इसका कारण भौगोलिक स्थिति है। यह भाग सोने तथा हीरे की खानों के लिये भी प्रसिद्ध है। इसीसे बहुत से आक्रमणकारी इस ओर आकृष्ट हुए। पश्चिमी तथा पूर्वी तटवर्ती प्रदेशों के लोगों ने अपने निकटवर्ती देशों से व्यापारिक संबन्ध स्थापित किया और इनमें सांस्कृतिक संपर्क हुआ। सुमात्रा, जावा, श्याम आदि देशों में भारतीय सभ्यता की छाप इसका प्रमाण है।

समुद्र

हमारे देश के तीन ओर समुद्र है। प्राचीन काल में जब सामुद्रिक शक्ति उतनी नहीं बढ़ी थी, समुद्र ने आक्रमणों से हमारी रक्षा की है। पूर्वी तथा पश्चिमी घाटों के कारण बहुत कम लोग समुद्र के निकट हैं। इसी कारण समुद्र की निकटता का लाभ हमारे देश के अधिक नागरिक न उठा सके और हमारा देश सामुद्रिक शक्ति में पीछे रहा। फिर भी समुद्र मार्ग से खूब व्यापार होता था। भारत पुरानी दुनियाँ के मध्य में है। इस भौगोलिक स्थिति के कारण हमारा देश अन्य देशों में अग्रगण्य रहा है।

भारत के उद्योग-धंधों, यातायात, आदि के विकास में भी भौगोलिक स्थिति का मुख्य हाथ रहा। गंगा यमुना के मैदान में खेती का विकास, बिहार में खनिज, बंगाल तथा बंबई प्रान्तों में कल कारखाने तथा तटवर्ती प्रदेशों में मछली का व्यवसाय भारत की अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण ही है। वातावरण के अधिकाधिक ज्ञान से ही मनुष्य प्रकृतिप्रदत्त पदार्थों का उचित उपयोग कर सकता है। इन प्राकृतिक साधनों का उपयोग हमारे ज्ञान तथा बुद्धि पर ही निर्भर है। यदि उपलब्ध प्राकृतिक साधनों का उचित उपयोग किया जाय तो हमारे देश की बहुत सी समस्याएँ हल हो सकती हैं। राष्ट्र के निर्माण में इस प्रकार भूगोल एक मुख्य अङ्ग है। भूगोल आधार है और इतिहास आधेय। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं है। भौगोलिक स्थिति ही राष्ट्र के निर्माण, उसके सांस्कृतिक राजनैतिक तथा धार्मिक उत्थान व पतन का कारण होती रही है और होती रहेगी।

प्रश्न और अभ्यास

१—भूगोल तथा इतिहास के परस्पर सम्बन्ध को व्यक्त कीजिए।

२—भारत की भौगोलिक स्थिति का भारत के इतिहास पर क्या प्रभाव पड़ा ?

—०—

भारत-भूमि

इस देश का नाम भारतवर्ष है। इसका यह नाम क्यों पड़ा इसके कई एक कारण बतलाये गये हैं। एक परंपरा के अनुसार दुष्यंत के पुत्र भरत के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा। दूसरे मत से भगवान ऋषभ देव के ज्येष्ठ पुत्र भरत के नाम से इसका नामकरण हुआ। तीसरा और संतोषजनक मत यह है कि समुद्र के

उत्तर और हिमालय के दक्षिण प्रदेश में वैदिक आर्यों की भरत जाति (वंश) की भारती संतति के रहने के कारण इसका नाम भारतवर्ष पड़ा। ईरानियों ने सिंधु नदी के प्रदेशों में रहनेवालों को हिन्दू तथा देश को हिन्दुस्तान कहा। भारत का 'इण्डिया' नाम यूनानियों की देन है। युरोपीय लोग इसी नाम से इस देश को पुकारते हैं।

आकार

एशिया महादेश के दक्षिण की ओर हिन्द महासागर में घुसे हुये त्रिभुजाकार प्रायद्वीप को भारतवर्ष कहते हैं। काश्मीर के उत्तर से भारत के दक्षिण तक २००० मील और बलूचिस्तान से आसाम तक २२०० मील से अधिक इसका विस्तार है। तट रेखा इसकी ६००० मील है। भारत का क्षेत्र फल १,५७०,००० वर्गमील है, जिसमें भारतीय संघ का क्षेत्रफल १२$\frac{1}{2}$ लाख तथा पाकिस्तान का ३$\frac{1}{2}$ लाख वर्गमील से कुछ अधिक है। जन-संख्या इसकी लगभग ३६ करोड़ की है। क्षेत्रफल में रूस को अलग कर देने पर यह यूरोप के बराबर है। इस प्रकार यह एक बहुत विशाल देश है। परिणाम इसका यह है कि जहाँ छोटे देशों के जीवन में एकरूपता होती है वहाँ भारत के जलवायु, उपज, मानव, जाति, भाषा इत्यादि में विविधतायें पायी जाती हैं।

सीमायें

ऊँचा और दुर्गम हिमालय भारत की उत्तरी सीमा बनाता है और एशिया के और देशों से उसको अलग करता है। हिमालय की पश्चिमी श्रृंखलायें दक्षिण पश्चिम में मुड़कर भारत को अफगानिस्तान और बिलोचिस्तान से अलग करती हैं। यह भारत की पश्चिमोत्तर सीमा है। पूर्वोत्तर में यही पहाड़ी दीवार दक्षिण की ओर झुककर भारत को चीन हिन्द-चीन और श्याम से अलग करती है। नीचे की तरफ भारत तीन ओर से हिंदमहासागर से घिरा हुआ

है। इन प्राकृतिक सीमाओं ने भारत को अन्य देशों की अपेक्षा अधिक एकांत बना रखा है। बाहरी हस्तक्षेप न होने के कारण ही यहाँ की एक विशिष्ट सभ्यता रही है।

स्थिति

उत्तरी गोलार्द्ध में ७ और ३७ अक्षांश और ६२ तथा ९८ देशांतर के बीच भारत स्थित है। कर्करेखा इसके मध्य से होकर जाती है तथा स्थूल रूप से देश को दो बराबर देशों में विभाजित करती है। इसके दक्षिण का भारत सारा उष्ण कटिबंध में है, जहाँ का जलवायु प्रायः साल भर गर्म रहता है। इसके उत्तर का भाग विंध्याचल और हिमालय के बीच शीतोष्ण कटिबंध है, जहाँ क्रम से जाड़ा, गरमी और बरसात तीन मौसम होते हैं। विभिन्नता होते हुये भी भारतवर्ष को उष्ण कटिबंधीय देश ही मानते हैं, क्योंकि पर्वतीय दीवार के द्वारा यह एशिया से स्पष्ट रूप से अलग है और सर्वत्र इसकी जलवायु प्रायः एक सी है।

भारत के एशिया की दक्षिण सीमा के मध्य में स्थित होने के कारण यह पूर्व में एशिया के दक्षिणी-पूर्वी और पूर्वी देशों तथा पश्चिम में एशिया के पश्चिमी देशों तथा स्वेज नहर से होते हुये यूरोप से समुद्री व्यापार के लिये अधिक उपयुक्त है। भारतवर्ष हिन्द महासागर के उत्तरी किनारे पर है, इसलिये इसकी स्थिति पूर्वी अफ्रिका और आस्ट्रेलिया से भी समुद्री व्यापार के लिये अत्यन्त उपयुक्त है।

अभ्यास और प्रश्न

१—किन कारणों से भारतवर्ष की स्थिति उसके लिए लाभदायक है।

२—भारतवर्ष की सीमा बतलाइये तथा यह स्पष्ट कीजिए की भारत दूसरे देशों से क्यों कटा हुआ है?

—०—

भारतवर्ष के प्राकृतिक विभाग

सारे देश को चार मोटे प्राकृतिक भागों में बाँटा जा सकता है। वे इस प्रकार हैं।

१—उत्तर की बड़ी पहाड़ी दीवार—हिमालय श्रृंखला।

२—उत्तर भारत के मैदान जिसको सिन्धु-गंगा का मैदान कहते हैं।

३—विन्ध्यश्रृंखला और मध्यप्रदेश के पठार।

४—दक्षिण प्रायद्वीप।

(१) हिमालय-श्रृंखला

भारतवर्ष के उत्तर में हिमालयश्रृंखला लगभग १६०० मील लम्बी पश्चिम से पूर्व को फैली हुई है। इस पहाड़ी दीवार को भिन्न-भिन्न स्थान पर भिन्न-भिन्न नाम दिये हुये हैं। एकदम उत्तर में पर्वतश्रेणियाँ तीन मील से भी अधिक ऊँची हैं। इसे पामीर की गाँठ कहते हैं। यहाँ से बड़ी ऊँची-ऊँची पर्वतश्रेणियाँ चारो दिशाओं में जाती है।(इन श्रेणियों में बड़ी हिमालय पर्वतश्रेणी है, जो पामीर गाँठ से दक्षिण पूरब में फैली हुई है,)जिसमें तिब्बत, भूटान, सिक्कम, नैपाल, उत्तरप्रदेश के पहाड़ी जिले, शिमला के पास की रियासतें और काश्मीर स्थित हैं। पहाड़ों की आन्तरिक श्रृंखला लगभग सर्वत्र १८००० फीट से अधिक ऊँची है। हिमालय श्रेणी में संसार के कुछ सब से ऊँचे पर्वत शिखर हैं। माउंट एवरेस्ट (गौरीशंकर) २९,१४१ फीट ऊँचा, किंचिंजंगा २७८१५ फीट ऊँचा है और इस तरह अनेक चोटियाँ हैं। नंगा पर्वत २६००० फीट, धौलगिरी २६००० फीट ऊँचे हैं। दूसरी पर्वतश्रेणी जो हिमालय

श्रेणी की उत्तरी शाखा है, पामीर गाँठ से पूर्व की ओर जाती है। इसका नाम काराकोरम श्रेणी है। इस श्रेणी का सब से ऊँचा शिखर माउन्ट केटू (K २) या माउन्ट गाडविन आस्टिन है, जिसकी ऊँचाई २८२५० फीट है। आगे चलकर पूर्व में यह श्रेणी कुनुलुन श्रेणी से मिल जाती है।

पश्चिमोत्तर में हिमालय को काटकर नदियों ने अपना रास्ता बना लिया है जिनसे दर्रे निकल आये हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध दर्रा खैबर है। इससे होकर काबुल से पेशावर आने का मार्ग है। इनके दक्षिण में गोमल और कुर्रम की धारायें पहाड़ियों को काटती हुई सिन्ध में गिरती हैं। इनकी घाटियों में से होकर अफगानिस्तान से आवागमन का मार्ग बन गया है। दक्षिण में चलकर सुलेमान और किरथर पहाड़ों के बीच में बोलन का प्रसिद्ध दर्रा है। इसमें होकर हिरात, कन्दहार और क्वेटा से सिन्धु की घाटी में आसानी से जाया जा सकता है। इस ओर सबसे दक्षिण में किरथर पहाड़ी और समुद्रतट के बीच में एक रास्ता है जिसके द्वारा समुद्र के किनारे किनारे होता हुआ ईरान और बलूचिस्तान से भारतवर्ष में आने का रास्ता है। इन्हीं रास्तों से होकर बहुत पुराने समय से भारतीय आर्य बाहर आते-जाते रहे हैं और बाद की विदेशी जातियाँ इस मार्ग से आईं। पूर्वोत्तर की पहाड़ियाँ पश्चिमोत्तर से ऊँची और इनमें दर्रे कम हैं। भारतवर्ष और ब्रह्मा के बीच की पहाड़ी दीवार के भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न नाम है। उत्तर में इसका नाम पटकोई की पहाड़ियाँ है। आगे बढ़कर ये पहाड़ियाँ नागा की पहाड़ियाँ और मनीपुर के पठार के नाम से विख्यात है। इसकी एक शाखा आसाम को जाती है, जिसमें खासी और गारो की पहाड़ियाँ हैं। मनीपुर के दक्षिण में लूशाई पहाड़ियाँ हैं और इसके आगे यह श्रेणी अराकान योमा कहलाती हैं।

हिमालय का प्रदेश सर्वदा हिमाच्छादित रहता है। यह प्रदेश केवल देश की उत्तरी सीमा ही नहीं बनाता। यह इसके जलवायु,

उपज तथा आर्थिक, राजनैतिक और मानसिक जीवन को भी प्रभावित करता है। उत्तरी एशिया से आनेवाली ठंडी हवा को रोककर यह देश को गरम रखता है। समुद्र से उठनेवाली पानी से लदी मानसून इससे टकराकर देश में भरपूर पानी बरसाती है। हिमालय से निकलनेवाली नदियाँ आदिकाल से ही उत्तर भारत के मैदान को सींचती रही हैं। ये नदियाँ प्रसार, व्यापार और युद्ध के लिये यातायात का साधन रही हैं। इस प्रकार हिमालय इस देश के आर्थिक जीवन का आधार है। भारत के राजनैतिक जीवन पर इसका गहरा प्रभाव है। एक सुदृढ़ तथा दुर्गम श्रृंखला के कारण कोई महत्वपूर्ण सैनिक आक्रमण इस ओर से अभी तक नहीं हुआ है। भारत का मानसिक जीवन, धार्मिक निष्ठा और साहित्य भी हिमालय से प्रभावित हुआ है। ऊँचे और शीत प्रदेश में स्थित, मैदान के कोलाहल से दूर, बनों से घिरी एकान्त कन्दराओं ने भारतीय विचारकों और योगियों को आकर्षित किया है, जहाँ उन्होंने जीवन की गम्भीर समस्याओं और आध्यात्मिक प्रश्नों पर विचार किया है। प्रकृति की इस विशालता ने भारतीयों पर एक अमिट छाप दी है और वे सदा हिमालय को आदर और श्रद्धा की दृष्टि से देखते रहते हैं।

हिमालय के पहाड़ों पर भाँति-भाँति के बन हैं, जिनमें अनेक प्रकार की वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। बनों में चौड़े पत्ते वाले तथा सदा हरे रहनेवाले वृक्ष हैं। लकड़ी का तो यह अक्षय भंडार है। कई प्रकार के ओक यहाँ के मुख्य वृक्ष हैं। अधिक ऊँचाई पर भिन्न प्रकार के सुन्दर देवदार और चीड़ के वृक्षों के बन हैं। वृक्ष काफी मोटे और और सीधे ऊँचे हैं। देवदार वृक्षों के कारण यहाँ राल काफी होती है।

इस पूरे प्राकृतिक प्रदेश की जनसंख्या बहुत कम है। सामान्य रूप से एक वर्ग मील में १०० से भी कम मनुष्य हैं। उदाहरण के लिये

सिक्किम की रियासत में एक वर्गमील में केवल ३० आदमी रहते हैं। तो भी इन पहाड़ियों पर दूर-दूर कुछ गाँव दिखाई देते हैं। ये गाँव बहुत छोटे-छोटे हैं। इनमें केवल कुछ झोपड़ियाँ हैं। प्रत्येक गाँव के चारों ओर थोड़ी सी भूमि में खेती होती है। ज्वार बाजरा जैसे अनाज की कुछ फसलें पैदा की जाती हैं। ग्रामवासी नाटे परन्तु मजबूत होते हैं। इनका चेहरा चपटा होता है और रंग गोरा। इस प्रदेश में अनेक प्रकार की भाषायें पाई जाती हैं। बहुधा एक गाँव की भाषा पड़ोस के दूसरे गाँव की भाषा से भिन्न होती है।

(२) उत्तर भारत के मैदान

हिमालय से नीचे उतरने पर उत्तर भारत के मैदान मिलते हैं। वे हिमालय और विन्ध्यमेखला के बीच में स्थित हैं। ये मैदान हिमालय से निकलनेवाली नदियों द्वारा लाई हुई मिट्टी से बने और उनसे सींचे जाते हैं। पहाड़ी दीवार के अन्तर्गत अरब-सागर से लेकर बंगाल की खाड़ी तक यह फैला हुआ है। यह संसार के प्रसिद्ध मैदानों में से है। इसका आकार धनुष का सा है। सारे उत्तरी भारत में एक छोर से दूसरे छोर तक इसकी लम्बाई २००० मील से ऊपर है और साधारणतः १५० मील से २०० मील तक चौड़ा है। यह मैदान तीन मुख्य तथा उनकी सहायक नदियों के प्रदेश से बना है। पश्चिम में सिन्धु नदी है जो अरबसागर में गिरती है। पूर्व में गंगा नदी है जो दक्षिण पूर्व में बहती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है। दिल्ली— जो भारत की राजधानी है इन दोनों नदियों के प्रदेश के मध्य में जल विभाजक स्थान पर स्थित है। सागर में मिलने से पहले गंगा में उत्तरी भारत की तीसरी महान नदी ब्रह्मपुत्र मिल जाती है। भारत के उत्तरी मैदान में कोई पहाड़ नहीं है। मैदान दूर तक समतल है। गंगा के मुहाने से १००० मील दूर गङ्गा का

तल समुद्र से केवल ५०० फीट ऊँचा है। दिल्ली जो देश के बीचो-बीच है समुद्र से केवल ७०० फीट की ऊँचाई पर है।

उत्तर भारत के मैदानों को तीन भागों में बाँट सकते हैं।

१—गंगा घाटी
२—सिंधु घाटी
३—ब्रह्मपुत्र घाटी

गंगा घाटी

गंगा घाटी उत्तर भारत के मध्य में स्थित है। इसलिये बंगाल को छोड़कर इसको प्राचीन काल में मध्यदेश कहते थे। हम ऊपर पढ़ चुके हैं कि दिल्ली के पूरब की नदियाँ गंगा से मिलने को पूरब की ओर बहती हैं। गंगा इस प्रदेश के मध्य से दक्षिण पूर्वी दिशा में बहती हैं। इसका उद्गम हिमालय से है। हरिद्वार से प्रवेश करके दक्षिण पूरब में इलाहाबाद में इस प्रदेश को छोड़ देती हैं। यमुना नदी जिसके किनारे दिल्ली है इस प्रदेश की पहले पश्चिमी सीमा बनाती है और बाद में दक्षिणी। यमुना भी हिमालय से निकलती है और बहुत दूर तक दक्षिण की ओर बहती है और धीरे-धीरे दक्षिण पूरब की ओर मुड़ जाती है। वहाँ यह गंगा के मैदान को मध्य भारत की ढालों से अलग करके अन्त में इलाहाबाद में गंगा में मिल जाती है। इसलिये ऊपरी गंगा के मैदान का एक बड़ा भाग गंगा यमुना के दोआब से बना है। उपरी गंगा के मैदान में ४०" के लगभग वर्षा होती है और यहाँ वे ही फसलें होती हैं जो सूखे प्रदेश के भागों में होती हैं। उपरी गंगा के मैदान में पाँच बड़े और महत्वपूर्ण नहर की संस्थिति है, जिन्होंने इस प्रदेश के विकास में बहुत सहयोग दिया है।

इस प्रदेश में सब जगह गेहूँ और जौ की खेती धान की अपेक्षा अधिक होती है। करीब करीब सब जगह केवल पूर्वी सीमा को छोड़कर गेहूँ, धान से अधिक मुख्य उपज है। उन जिलों में जो

अधिक सूखे हैं बिल्कुल धान नहीं होता। गेहूँ के बाद दूसरा ज्वार बाजरा है। मक्का, चना और भिन्न भिन्न दालें बहुत पैदा की जाती हैं। भोजन के काम में न आने वाली मुख्य उपज कपास हैं। वैसे तो ईख की खेती भारत के अधिकतर भागों में होती है, परन्तु इसके उपज का सबसे मुख्य प्रदेश ऊपरी गंगा का मैदान है जो पूर्वी पंजाब से पश्चिमी बंगाल तक फला है। यह भारत का ईख कटिबंध है, जिसका अधिकांश भाग उत्तर प्रदेश में पड़ता है। इस प्रदेश में अफीम भी पैदा होती हैं और अफीम का कारखाना गाजीपुर में है। जानवरों का चारा भी यहाँ की एक मुख्य उपज है। गंगा के मैदान के आकार को देखते हुए यहाँ भारत के और प्रदेशों की अपेक्षा ज्यादा जानवर हैं। बैल और भैंस दोनों बड़ी संख्या में हैं। ये हल चलाने के काम में आते हैं और गायें दूध के लिये पाली जाती हैं। सूखा प्रदेश होते हुए भी यहाँ इतनी अधिक खेती होती है कि यहाँ ऊसर भूमि जिस पर भेड़ें चर सकें बहुत कम बची है।

इस प्रदेश में दो प्रकार के उद्योग हैं, ग्राम्य और मशीन उद्योग। पहला उद्योग लोग अपने घरों में करते हैं और दूसरा मिल आदि कारखानों में। ग्राम उद्योग में महत्वपूर्ण काम कपास का कातना बुनना है, इसके मुख्य केन्द्र बनारस, टांडा, मऊ, संडीला, इटावा और मेरठ हैं। बनारस रेशम, किमखाब के लिये प्रसिद्ध है। बनारसी साड़ियाँ हर जगहों में प्रसिद्ध हैं। चिकन का काम लखनऊ में होता है। तौलिया गोरखपुर में दरी सीतापुर आगरा और बरेली में बनती है। इस प्रदेश का शीशा (काँच) उद्योग भी बहुत प्रसिद्ध है, कारण यहाँ बालू बहुतायत से पाया जाता है, जो काँच बनाने के लिये आवश्यक वस्तु है। फीरोजाबाद तथा नैनी और बनारस में इसके कारखाने हैं। पीतल के सामानों के लिये मुरादाबाद, मिर्जापुर और बनारस प्रसिद्ध हैं।

मिल उद्योग का केन्द्र कानपुर है, यहाँ ऊनी, सूती मिलें हैं चमड़ा, जूट, साबुन, अल्युमिनियम तथा रासायनिक पदार्थों का

उत्पादन भी यहाँ होता है ऊनी कपड़ों के लिये कानपुर बहुत प्रसिद्ध है, यहाँ भारत की सबसे बड़ी ऊनी मिल है, चीनी के कारखाने भी यहाँ हैं। भारत की आधे से ज्यादा शक्कर की मिलें इसी प्रदेश में हैं, वनस्पति-घी दियासलाई, कागज तथा खेल-कूद के सामान भी यहाँ बनते हैं।

मनुष्य और नगर

इस प्रदेश के लोग अधिकतर खेती करते हैं। छोटे-छोटे गाँवों में रहते हैं, ऐसे गाँव सारे मैदान में फैले हुए हैं। मिट्टी तथा टट्टर और खपरैल के मकान हैं। इस प्रदेश की भाषा विशेषकर हिन्दी है, और अधिकतर हिन्दू जाति के लोग रहते हैं। ऊपरी गंगा के मैदान में चौदह नगर ऐसे हैं, जिनकी पचास हजार के लगभग जनसंख्या है, नगर को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं।

(क) प्राचीन बड़े नगर, प्रसिद्ध धार्मिक केन्द्र अथवा प्राचीन राजधानी जैसे दिल्ली, आगरा, इलाहाबाद, लखनऊ और मथुरा काशी आदि।

(ख) वे नगर जिसमें आवश्यकतानुसार आधुनिक परिवर्तन हो गये हैं। जिनमें बड़े बड़े बाजार पक्के और सुन्दर मकान हैं इन जगहों में शिल्पकला तथा कारीगरी को अच्छा स्थान प्राप्त है, जैसे कानपुर, मेरठ. मुरादाबाद, बनारस, बरेली, शाहजहाँपुर, सहारनपुर, आदि नगरों का विशेष वर्णन आगे किया जायेगा।

मध्य गंगा का मैदान

पिछले पाठ में हमने उत्तरी गंगा के मैदान का वर्णन पढ़ा था, जहाँ प्रतिवर्ष ४० इंच से कम वर्षा होती है और जहाँ फसल के लिये सिंचाई की आवश्यकता होती है, मध्य गङ्गा का मैदान ऐसा प्रदेश है जहाँ ६०, ७० इंच के लगभग वर्षा होती है। इस प्रदेश की भूमि प्रतिवर्ष वर्षा के जल से भरी रहती है।

यहाँ की मुख्य पैदावार धान है। इस प्रदेश में गंगा के ऊपर स्थित बिहार का लगभग पूरा प्रदेश, उत्तर प्रदेश का वह भाग जो इलाहाबाद के पूरब में और नदी के उत्तर में है सम्मिलित है, यह प्रदेश न तो बहुत शुष्क है और न बहुत आर्द्र। इलाहाबाद से गंगा नदी के मुहाने की ओर उत्तरोत्तर पूरब में जलवायु क्रम से बहुत आर्द्र होती जाती है और सूखे प्रदेश के फसलों के स्थान पर आर्द्र प्रदेश की फसलें बढ़ती जाती हैं। यद्यपि एक ओर से लेकर दूसरे छोर तक इसके जलवायु में विभिन्नता है, फिर भी मध्य गंगा के मैदान की अपनी कुछ विशेषताएँ हैं। सोन नदी की नहर को छोड़ कर, सिंचाई के लिये यहाँ और नहरें नहीं हैं। वर्षा यहाँ पर्याप्त होती है और नहर की सिंचाई के बगैर भी यहाँ फसलें पैदा होती हैं। ग्रीष्म ऋतु में कुएँ के जल से सिंचाई होती है। समुद्र के समीप होने के कारण गर्मी में यहाँ ज्यादा गर्मी नहीं पड़ती, परन्तु वायु शुष्क रहती है, जाड़े के ऋतु में भी शुष्क वायु होने के कारण ठंढक अधिक पड़ती है। इस प्रदेश का वह भाग जो गंगा नदी के दक्षिण में है कुछ अधिक सूखा है, यहाँ पर नहरों से सिंचाई होती है, नहरों में सोन नदी का पानी आता है।

ऊपरी गंगा के मैदान की तरह यह भी एक और चौरस प्रदेश है, जहाँ कोई पहाड़ नहीं है। इसकी दक्षिणी सीमा के समीप गंगा नदी की मध्य धारा है, परन्तु इसके उत्तरी तीन चौथाई प्रदेश को हिमालय से निकलने वाली कई नदियों से जल मिलता है। नदियों के कीचड़ व बालू के कारण इनके किनारे ऊँचे हैं, वर्षा में इन नदियों में बाढ़ आ जाती है और नदियाँ बहुधा पुराना मार्ग छोड़कर नया मार्ग ग्रहण कर लेती हैं इसी कारण मध्य गङ्गा के मैदान में अनेकों झील और दलदल हैं। यहाँ पुराने जंगल बिल्कुल नहीं बचे हैं। गङ्गा नदी के दक्षिण की भूमि अधिकतर सूखी है और यहाँ दलदल भी बहुत कम हैं।

धान यहाँ की मुख्य उपज है, गेहूँ और जौ आदि कम होते हैं यहाँ बहुत सी भूमि में तेलहन (अलसी, सरसों, तिल, राई आदि) पैदा होता है, गन्ने की पैदावार के लिये भारत का यह सबसे अधिक महत्व पूर्ण क्षेत्र है, गन्ने की खेती उत्तर प्रदेश और बिहार के उत्तरी मैदानों में सीमित है, भारत की सम्पूर्ण चीनी का १।३ भाग यही होता है और शक्कर की अधिक मिलें भी इसी प्रान्त में है। बिहार में चीनी की मिलें चम्पारन, भागलपुर, मुजफ्फरपुर में है, अफीम भी यहाँ पर्याप्त मात्रा में होती है, गाजीपुर में इसकी गवर्नमेंट फैक्ट्री है।

किसी समय नील की खेती के लिये यह भारत का मुख्य प्रदेश था, परन्तु कारखानों में रासायनिक रंग बनने के कारण इसका व्यवसाय नगण्य हो गया। मनुष्य इस प्रदेश के अधिक बड़े भाग (बिहार) के रहने वाले बिहारी कहे जाते हैं, स्वास्थ्यप्रद जलवायु के कारण यहाँ के अधिवासी अधिकतर स्वस्थ होते हैं। इस प्रदेश के तीन चौथाई मनुष्य खेती करते हैं। ऊपरी गंगा के मैदान के विपरीत यहाँ पर बड़े नगर कम हैं। इनमें कुछ प्रसिद्ध प्राचीन और अधुनिक नगर हैं, जिनमें व्यावसायिक उद्योग उन्नति पर है।

बनारस, मिर्जापुर, फैजाबाद, गोरखपुर, पटना, भागलपुर, मुंगेर, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, छपरा, बिहार तथा गया मुख्य नगर है।

डेल्टा प्रदेश

हम ऊपरी गंगा के मैदान और मध्य गंगा मैदान के बारे में जानकारी प्राप्त कर चुके, अब केवल निचली गंगा का मैदान और डेल्टा बच रहा है। यह भाग बंगाल के लगभग पूरे प्रान्त से बना है और इसमें गङ्गा तथा ब्रह्मपुत्र के मैदानों का निचला भाग तथा आसाम की सूरमा की घाटी का प्रदेश सम्मिलित है। इस प्रदेश में दार्जिलिंग जलपाई गुड़ी चिटागाँव का पहाड़ी प्रदेश और चिटागाँव के कुछ भाग को छोड़कर पूरा बंगाल तथा सिलहट का जिला अथवा

सूरमा की घाटी सम्मिलित है, इसको गङ्गा, ब्रह्मपुत्र और उनकी सहायक, उपसहायक नदियां सींचती हैं, प्रदेश बहुत चौरस है, हजारों वर्ग मील तक कहीं भी पहाड़ तथा चट्टानें नहीं हैं। अधिक वर्षा के कारण यह प्रदेश ऊपरी मध्य गङ्गा के मैदान से बहुत भिन्न है। यह प्रदेश सदैव हरा भरा रहता है।

यहां की जलवायु अधिक सम है। वर्षा यहाँ सब जगह अच्छी होती है। हर जगह अच्छी घनी वनस्पतियां और धान की खेती होती है, बाँस, खजूर, केला, नारियल और सुपाड़ी के वृक्ष यहाँ अधिक मात्रा में मिलते हैं। उत्तर में तराई से दक्षिण में गङ्गा तक गङ्गा ब्रह्मपुत्र का दो आबा है। हिमालय से आने वाली नदियां इस प्रदेश को सींचती है। यहाँ धान और पाट खूब पैदा होता है। हुगली और मधुमती नदियों के मध्यवर्त्ती भाग को पुराना डेल्टा कहते हैं। जहाँ सुन्दरवन है, जो जंगल और दल-दल से भरा हुआ है। इस प्रदेश की मुख्य नदी दामोदर है। इस प्रदेश के पश्चिम के भाग में पश्चिमी बंगाल और बिहार की कोयले और लोहे की खाने हैं। रानीगंज आसनसोल और झरिया मुख्य केन्द्र हैं।

सूरमा की घाटी नदी नाले और उन की शाखाओं के जाल से पूर्ण हैं। यहाँ हर साल बाढ़ आती है, गङ्गा और ब्रह्मपुत्र की मट्टी इसे उपजाऊ बनाती है। बरसात में यह प्रदेश केवल जलखण्ड मात्र रहता है, परन्तु यह अत्यन्त उपजाऊ प्रदेश है, यहाँ धान और पाट बहुत होता है, यहाँ की आबादी भी घनी है, यह भूमि घास और जंगलों से ढकी हुई है।

मनुष्य

इस प्रदेश के रहने वाले प्रायः बंगाली हैं और पंचानवे फीसदी आदमियों की मातृ-भाषा बंगला है। धर्म के आधार पर लगभग आधे हिन्दू और आधे मुसलमान हैं, तीन चौथाई मनुष्य कृषक जीवन बिताते हैं, वे धान और पाट की खेती करते हैं। लोग गाँव के झोपड़ों

में रहते हैं। इस प्रदेश में केवल सात बड़े बड़े नगर हैं, जिनमें प्रसिद्ध कलकत्ता, मुर्शिदाबाद, तथा ढाका है। सूरमा की घाटी का सबसे बड़ा नगर और व्यापारिक केन्द्र सिलहट है। चिटागाँव पूरबी बगाल का बन्दरगाह है और इसका मुख्य निर्यात जूट चावल और आसाम की चाय है। यहाँ पर जूट की मिले भी हैं।

सिन्धु घाटी

गङ्गा घाटी के बायें तरफ सिन्धुघाटी है, जो सिन्ध और उसकी सहायक नदियों से सींची जाती है। ये पंजाब के मैदान है, जो वास्तव में सतलज, व्यास, रावी, चिनाब और झेलम की घाटियों के मैदान हैं। ये नदियाँ हिमालय से निकल कर दक्षिण-पश्चिम की दिशा में बहती हैं। आगे चलकर ये पाँचों मिलकर एक नदी बन जाती हैं और तब वे पंजाब के दक्षिण-पश्चिम कोण में सिंधु नदी से मिलती हैं। ग्रीष्मऋतु में पंजाब की नदी छिछली रहती हैं, परन्तु वर्षा में नदी में बहुत अधिक जल हो जाता है, झीलें चौड़ी हो जाती हैं और वेग तीव्र हो जाता है। नदियाँ यहाँ की प्रायः मार्ग बदलती रहती हैं। कभी-कभी रातोरात मीलों तक उपजाऊ खेतों को नष्ट कर देती हैं और अपने लिये एक नया रास्ता बना लेती हैं।

पंजाब का मैदान एक सूखा प्रदेश है। सतलज नदी के दक्षिण में भूमि धीरे-धीरे ऊँची होती जाती है और अधिकाधिक सूखी होती जाती है। यहाँ तक कि यह फिर मरुस्थल प्रदेश की ऊसर भूमि से मिल जाती है। पंजाब के मैदान समतल हैं। इनमें कोई पहाड़ी नहीं है। पहाड़ों के तल से दक्षिण-पश्चिम की ओर इसमें हल्का ढाल है। इस प्रदेश में ग्रीष्मकाल में विशेष गर्मी पड़ती है, कारण यहाँ समुद्री वायु नहीं आती और यहाँ के चौरस मैदानों में सूर्य की प्रखर किरणें पड़ती हैं। जाड़े के दिनों में सर्दी भी यहाँ अधिक पड़ती है, क्योंकि यह भाग समुद्र से दूर है और जल्दी ठंढा हो जाता

है। इस पूरे प्रदेश में वर्ष में ४०" से भी कम पानी बरसता है। सबसे अधिक सूखा भाग दक्षिण-पश्चिम में है, जहाँ ५" से भी कम वर्षा होती है। कम वर्षा के कारण यहाँ के मनुष्य कठिन परिश्रम करके सिंचाई से भूमि को उर्वरा बनाते हैं। सिंचाई यहाँ कुएँ, बरसाती नहरों तथा स्थायी नहरों द्वारा होती है।

पंजाब के पूर्वोत्तरी मैदान सबसे अधिक आर्द्र हैं, क्योंकि पहाड़ों के समीप हैं। यहाँ २५" से ३०" तक वर्षा होती है। जाड़े में भी थोड़ा पानी गिरता है। इस प्रदेश में बहुत से कुयें हैं और नहरों द्वारा सिंचाई के बिना भी फसलें पैदा होती हैं। पश्चिमी मैदान शुष्क है और साधारणतः यहाँ ५" से १०" तक वर्षा होती है। यहाँ सिंचाई के बिना कुछ पैदा होना असम्भव-सा है। पाकिस्तान में स्थित पश्चिमी पंजाब का अधिकांश भाग इसी मैदान के अन्तर्गत आता है। पूर्वी मैदानों में २०" से ३०" तक वर्षा होती है, परन्तु वर्ष प्रतिवर्ष घटती बढती रहती है। अच्छी वर्षा होने पर कई सूखी फसल पैदा होती है, परन्तु जब वर्षा अच्छी नहीं होती तो अकाल की सी स्थिति हो जाती है। भारत में स्थित पूर्वी पंजाब का अधिकांश भाग इसी मैदान के अन्तर्गत पड़ता है। चूंकि पंजाब के मैदान की उपज का एक बड़ा भाग सिंचाई पर ही निर्भर करता है, इसलिये यहाँ कई नहरें तथा बाँध हैं। मुख्य छ बड़ी नहरें तथा उनकी शाखायें इन मैदानों में हैं। अन्य बड़े बाँध जिनसे भूमि का अधिकांश भाग उपजाऊ बनाया जा सकेगा—बन रहे हैं। इनके बनने पर पञ्जाब एक अत्यन्त समृद्धिशाली प्रदेश हो सकेगा।

पञ्जाब के मैदानों की मुख्य उपज गेहूँ है। कृषि के लायक भूमिखण्ड के एक तिहाई भाग में इसी की खेती होती है। दूसरी मुख्य उपज ज्वार, बाजरा है, परन्तु बहुधा इनकी खेती उसी भूमि में होती है जिसमें कि गेहूं की खेती होती है। जहां गेहूँ पैदा नहीं हो सकता वहाँ ज्वार बाजरा ही मुख्य फसल के रूप में पैदा होता है।

गेहूँ, ज्वार, बाजरा और मक्का यहाँ के आदमियों का मुख्य भोजन है। सिंचाई के अच्छे प्रबन्ध के कारण पञ्जाब में कभी कभी निवासियों की आवश्यकता से अधिक गेहूँ पैदा होता है तथा बचा हुआ गेहूँ और प्रांतों में भेज दिया जाता है। जौ दूसरी मुख्य उपज है। तिलहन भी यहाँ की एक मुख्य उपज है, जो अधिकतर निर्यात होता है। पञ्जाब के मैदान के पूर्वोत्तरी भाग में बहुत गन्ना पैदा होता है। कपास भी यहाँ कसरत से होती है। यहाँ की कपास उत्तम रेशेवाली होती है, जो बाहर भेजी जाती है। शुष्क प्रदेशों में जानवरों के लिये पर्याप्त घास न होने के कारण यहाँ चारा भी पैदा करना पड़ता है। इस प्रदेश में भेड़, बकरी, गाय तथा बैल मुख्य जानवर हैं।

इस प्राकृतिक प्रदेश के अधिकांश लोग खेती करते हैं और छोटे-छोटे गाँवों में रहते हैं। ऐसे गाँव सारे मैदान में फैले हैं। मिट्टी तथा टट्टर के बने झोपड़ों में ये रहते हैं, क्योंकि इस प्रदेश में पत्थर नहीं मिलता। पञ्जाब के—लाहौर, मुल्तान, लायलपुर, गुजरातवाला, मोन्टगोमरी, पटियाला, अमृतसर, लुधियाना अम्बाला और जलन्धर मुख्य नगर हैं।

सिन्ध

सिन्ध प्रदेश सिन्धु नदी के बेसिन का निचला भाग है और उत्तरी भारत के बड़े मैदान का एक भाग है। यह एक चौड़ा शुष्क तथा मिट्टी से ढका मैदान है। इसके मध्य में होकर सिन्धु नदी बहती है जो इसका जीवन और आत्मा है। सिन्धु पंजाब के मैदान को सिन्धु के मैदान से अलग करती है। यहाँ पर इस बड़ी नदी को पार करने के लिये एक रेल का पुल रोहड़ी पर बना है। यहीं पर सक्कर के ठीक नीचे सिंचाई के लिये एक बहुत बड़ा बाँध नदी के ऊपर बाँधा गया है।

यह एक बड़ा सूखा प्रदेश है। इसके कुछ भाग में ५" से भी कम वर्षा होती है। समुद्रतट पर थोड़ी अधिक वर्षा होती है, फिर

भी यह अत्यधिक सूखा है। यदि यहाँ सिन्धु नदी न होती, जिसके पानी से खेतों में सिंचाई होती है, तो यह एकदम मरुस्थल होता। यहाँ इतनी कम वर्षा होती है कि यहाँ सिंचाई के बिना फसल पैदा हो ही नहीं सकती। सक्कर बाँध के कारण सिन्धु का जल सिन्ध के एक बड़े भूखण्ड को सींचता है। यहाँ बहुत सी नहरें बन चुकी हैं और बहुत सी बन रहीं हैं।

यहाँ की मुख्य उपज गेहूँ, ज्वार, बाजरा और कपास हैं। कराँची और हैदराबाद (सिन्ध) वहाँ के मुख्य नगर है। कराँची गेहूं भेजने का एक बड़ा बन्दरगाह है। यहाँ से बहुत सी कपास बाहर के देशों में भेजी जाती है। भारत में अधिकांश छोटे रेशे की रुई के मुकाबले पञ्जाब की रुई उत्तम तथा लम्बे रेशे वाली होती है। इसको अमरीकन कपास कहते हैं, जो ब्रिटेन और यूरोप को भेजी जाती है।

ब्रह्मपुत्र की घाटी

ब्रह्मपुत्र की घाटी गङ्गा घाटी के दायें तरफ है। इसकी बनावट गङ्गा और सिन्धु के मैदानों से भिन्न है। यह अधिकतर पर्वतीय प्रदेश है। उत्तर की ओर हिमालय पर्वत इससे बहुत दूर नहीं हैं। दक्षिण में आसाम की पहाड़ियाँ—गारो, खासी और जैन्तिया की पहाड़ियाँ नदी के बहुत समीप आ जाती हैं। ब्रह्मपुत्र की घाटी में जितनी समतल भूमि है उसमें अधिकतर धान की खेती होती है। पहाड़ियों की ढालों पर चाय के बगीचे हैं, जिनके लिये आसाम प्रसिद्ध हैं।

ब्रह्मपुत्र आसाम के पठार से निकलकर उत्तरी पहाड़ी दीवार को चीरती हुई आसाम में आने से पहले बहुत दूर तक पूर्व की ओर बहती रहती है। आसाम में ब्रह्मपुत्र की घाटी स्थूल रूप से ५०० मील लम्बी है, परन्तु चौड़ी केवल ५० मील है। नदी स्वयं चौड़ी है। कई स्थान पर इसकी कई धारायें हो जाती हैं, परन्तु फिर सब

मिल जाती हैं। नदी के दोनों किनारों की भूमि बहुधा दलदल है, परन्तु नदी से थोड़ी दूर पर चौरस भूमि है, जिसमें धान की खेती होती है। धान के खेतों के बीच-बीच गाँव और खजूर के पेड़ दिखाई पड़ते हैं। नदी से और दूरी पर पहाड़ी ढालों पर चाय के वगीचे हैं। ब्रह्मपुत्र में दोनों ओर से कई छोटी-छोटी नदी आकर मिलती है।

आसाम की घाटी के एक बड़े भाग में वर्षा अच्छी होती है। लगभग ८०" वर्षा होती है। इसका कारण यह है कि ब्रह्मपुत्र की घाटी का कुछ भाग, गारो खासी और जैन्तिया की पहाड़ियों की छाया में है। ये पहाड़ियां दक्षिण पश्चिम मानसून को घाटी में पहुँचने से रोकती हैं। ब्रह्मपुत्र की घाटी डेल्टा प्रदेश के मैदानों की अपेक्षा ज्यादा उत्तर की तरफ हैं, इसलिये जाड़े में यहाँ उन मैदानों की बनिस्बत अधिक सर्दी पड़ती है। ग्रीष्म और वर्षा में बादल घिरे रहते हैं, इसलिये यहाँ ऐसी गर्मी जैसी कीं गङ्गा के ऊपरी मैदान में पड़ती है—नहीं पड़ती और न भूमि इतनी सूखी होती है।

ब्रह्मपुत्र की घाटी के एक बड़े भाग में खेती होती है। गङ्गा के बड़े मैदान के निकट अर्थात् उत्तरी बंगाल के डेल्टा प्रदेश, गोयलपाड़ा और कामरूप के पश्चिमी जिलों में आबादी सबसे अधिक घनी है और यहाँ मैदान के पूर्वी छोर की अपेक्षा खेती ज्यादा होती है। इस प्रदेश की बहुत सी भूमि ऊसर पड़ी है, जहाँ कि खेती हो सकती है। यहाँ अब भी केवल १५० आदमी प्रति वर्ग मील में रहते हैं। प्रतिवर्ष बिहार और बंगाल के बहुत से मनुष्य बंगाल के अधिक घने भाग से आकर आसाम में बसते हैं और चाय के बागों में काम करते हैं। ये ही लोग ब्रह्मपुत्र की ऊसर भूमि को जोतना बोना प्रारम्भ कर देते हैं। इस तरह यहाँ की जनसंख्या तीव्रता से बढ़ रही है और ऊसर भूमि काम में आती जा रही है।

यहाँ सबसे अधिक खेती धान की होती है और यही वहां की जनता का मुख्य भोजन है। जितना धान वहाँ पैदा होता है वह सब वहीं के लोगों के काम में आ जाता है और बाहर के देशों को भेजने लिए कुछ नहीं बचता। यहां की दूसरी मुख्य उपज चाय है। चाय की झाड़ियाँ ब्रह्मपुत्र की घाटी के दोनों ओर पहाड़ियों के ढालों पर हैं। इन चाय के बगीचों से आसाम के बहुत से लोगों की जीविका चलती है। चाय के बगीचे पश्चिम की ओर ब्रह्मपुत्र की घाटी के पार उत्तरी बंगाल में हिमालय प्रदेश तक दार्जिलिंग और जलपैगुड़ी तक फैले हैं। ब्रह्मपुत्र की घाटी के दोनों ओर की ढाल पर; सिलहट के समीप, गारो और खासिया के पहाड़ियों का ढाल पर तथा सूरमा घाटी की चौरस भूमिपर काफी चाय पैदा होती है। आसाम की घाटी में तिलहन भी एक मुख्य पैदावार है। आसाम घाटी प्रदेश के पूर्वी छोर पर पूर्वी पहाड़ियों के प्रदेश के किनारे पर डिगवाई के तेल के कुएँ हैं। यहां एक छोटी कोयले की खान भी है, जिसका कोयला यहीं उपयोग में आ जाता है।

यातायात के लिए रेल, स्टीमर तथा नावों का उपयोग होता है। दीमापुर से मणिपुर रियासत को एक कच्ची सड़क जाती है। गौहाटी से शिलौंग तक एक अच्छी पक्की सड़क है।

(३) विन्ध्य मेखला

उत्तर के मैदान के दक्षिण में समुद्र तट के प्रदेशों को छोड़कर बंगाल की खाड़ी से लेकर अरब सागर तक विन्ध्य पर्वत की शृंखलायें फैली हुई हैं। शृङ्खलाओं के लटकने के कारण उनको मेखला कहते हैं। इसी मेखला के समानान्तर दो पर्वतश्रेणियां और हैं, जिनको सतपुड़ा की पहाड़ी और अजन्ता की पहाड़ी के नाम से जाना जाता है। सतपुड़ा की पहाड़ी पश्चिम से पूर्व की ओर जाती है। पूर्व में आगे जाकर यह पर्वत श्रेणी महादेव की पहाड़ी और मैकल की पहाड़ी के नाम से प्रसिद्ध है। इस पर्वतश्रेणी ने दुर्गम वनों से भरे रहने के

कारण उत्तरी भारत के निवासियों को दक्षिण भारत के निवासियों से पृथक् रखा है। भारत का वह भाग जो सतपुड़ा के उत्तर में हैं वह सिंधु और गङ्गा मैदान की ओर ढालू होता गया है। इस भाग में राजपूताना का पश्चिमोत्तर भाग और सिंध पंजाब के समीपवर्ती भाग सम्मिलित है। इसी भाग में अरावली की पहाड़ियाँ हैं। यही ढालू क्षेत्र थार का बड़ा मरुस्थल है, जो अरावली श्रेणी की ढाल और सिंधु के मैदान के बीच में स्थित है। यहाँ कोई बड़ी नदी नहीं है, जिससे सिंचाई हो सके। जहाँ थोड़ा बहुत पानी मिलता है वहाँ ज्वार बाजरा और चारा ही पैदा होता है। इस प्रदेश में बहुत कम लोग रहते हैं। सतपुड़ा की पहाड़ियों से अरावली तक ऊँची भूमि का एक बड़ा विस्तार है जो पहाड़ी और पथरीला है। यही राजपूत पठार देश है। इस प्रदेश के उत्तरी आधे भाग में देशी रियासतों का वह समूह है जिसे राजपूताना कहते हैं। पश्चिमी भाग का हमने राजपूत पठार प्रदेश के नाम से वर्णन किया है। पूर्वी भाग को हम भारत की अग्रभूमि कह सकते हैं। यह भूमि मध्यप्रान्त के पठार तथा गङ्गा के मैदान के बीच में है और उत्तर में यमुना नदी तक फैली है। यहाँ अच्छी वर्षा होती है। मुख्य उपज यहां की धान है। आबादी भी अधिक घनी नहीं है। प्रतिवर्ग में लगभग १२० आदमी रहते हैं।

(४) दक्षिणी प्रायद्वीप

यह प्रदेश विन्ध्यमेखला के दक्षिण में है। तीन ओर से यह समुद्र से घिरा है। इसके भीतर पश्चिमी और पूर्वी घाट के प्रान्त और बीच के पठार सम्मिलित हैं।

पश्चिमीतट प्रदेश—एक सकरी पट्टी है, जो पश्चिमी घाट और अरब सागर के मध्य में है। पश्चिमी घाट दक्षिणी प्रायद्वीप अथवा दक्षिणी भारत के बड़े पठार का पश्चिमी किनारा है। इसके उत्तरी भाग का कुछ भाग अच्छी मिट्टी का है। कई एक नदियाँ पश्चिमी घाट से निकलकर

समुद्र में गिरती हैं। दक्षिणी पश्चिमी मानसून के कारण यहाँ वर्षा भी अच्छी होती है। इसी कारण यहाँ बहुत से वन हैं। सागौन के वृक्ष यहाँ बहुतायत से होते हैं। नारियल और सुपाड़ी भी कसरत से पैदा होती है। मसालों में यहाँ कालीमिर्च के पौधे यहाँ पाये जाते हैं। मुख्य उपज यहाँ की धान है। इस भाग में केवल एक मुख्य द्वीप है जिसपर बंबई स्थित है। बंबई से दक्षिण की ओर गोआ है, जो एक अच्छा बन्दरगाह है। बड़ा बन्दरगाह केवल बम्बई है। तट का किनारा एकदम सीधा होने के कारण यहाँ खाड़ियाँ बहुत कम हैं और इसी लिये यहाँ बहुत कम बन्दरगाह हैं।

पश्चिमीतट प्रदेश का दक्षिणी भाग मलाबार तट के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ पहाड़ियाँ और समुद्र के बीच मिट्टी से ढके तटीय मैदान चौड़े हैं। यह प्रदेश बहुत आर्द्र है। समुद्र के तट पर बालू के ढेर हैं, जिन पर नारियल के वृक्ष बहुतायत से होते हैं। बालू के ढेर के पीछे चौरस मैदान है। इनमें बहुत सी झीलें हैं। अनेकों झीलें समुद्र से बनी हैं जो एक बन्दरगाह का काम करती हैं। इनमें से एक कोचीन का बन्दरगाह है। कृषियोग्य भूमि में धान की खेती होती है। सुपाड़ी के पेड़ होते हैं और कालीमिर्च के पौधे लगाये जाते हैं। मैदान के बाद पश्चिमीघाट की ढाल है जो घने सदाबहार वनों से ढकी है। इस प्रदेश का लगभग चौथाई भाग वनों से पूर्ण है। ट्रावनकोर यहाँ का घना प्रदेश है। रबर का उत्पादन यहाँ का मुख्य धंधा है। तट पर मछली पकड़ना एक आम धंधा है। मंगलोर, कालीकट, अलप्पी, कैल्लन और ट्रिवेन्ड्रम यहाँ के मुख्य नगर हैं। पश्चिमीघाट नीलगिरी की पहाड़ियों पर आकर समाप्त हो जाता है।

पूर्वीतट प्रदेश—पूर्वीतटवर्ती प्रदेश पूर्वीघाट कहलाते हैं। इस प्रदेश में मद्रास प्रान्त से लेकर उत्तर की ओर उड़ीसा के नीचले मैदान सम्मिलित हैं। यह भाग पूर्वीघाटी पहाड़ियोंसे भरा हुआ है। इन पहाड़ों पर हरियाली नहीं है। इस प्रदेश का मध्य भाग गोदावरी और कृष्णा

के बड़े डेल्टाओं से बना है। उत्तर में महानदी का डेल्टा है। यहाँ चिल्का झील बड़ी और छिछली है। डेल्टाओं की मुख्य उपज धान है। परन्तु जिन स्थानों पर वर्षा कम होती है वहाँ ज्वार बाजरा भी होता है। वर्षा लगभग ४० इंच के होती है। कृष्णा और गोदावरी के क्षेत्रों में सिंचाई भी होती है। इसलिये यहाँ धान खूब पैदा होता है। मसाला भी यहां की मुख्य उपज है। नदियों के डेल्टाओं के आस-पास वन है, जहां साल के वृक्ष अधिक हैं। इस प्रदेश में बहु-मूल्य खनिज पदार्थ भी मिलते हैं।

इस तट पर कोई अच्छे प्राकृतिक बन्दरगाह नहीं है। प्राकृतिक प्रदेश का सबसे बड़ा बन्दरगाह विजगापट्टम है, जो किसी हद तक एक पहाड़ी अन्तरीप के कारण सुरक्षित है। कोकनडा, कलिङ्गा-पट्टम, गोपालपुर यहाँ के दूसरे बन्दरगाह हैं। मद्रास एक अच्छा अप्राकृतिक बन्दरगाह है। उड़ीसा के दो महत्वपूर्ण नगर कटक और पुरी भी इसी प्रदेश में हैं।

पश्चिमी और पूर्वी घाट के बीच दक्षिण का पठार हैं। इस पठार की भूमि ज्वालामुखी से निकली हुई राख और लावा से बनी हुई होने के कारण उपजाऊ है। यह प्रदेश महीन उपजाऊ काली मिट्टी का बना है, जो कि कपास की खेती के लिये उपयुक्त है। लावा प्रदेश में पूरा बरार और हैदराबाद का पश्चिमी अर्ध भाग आता है। इस भाग में ४०" से कम पानी बरसता है। शुष्क होते हुए भी इस प्रदेश की बहुत कम भूमि बेकार रहती है। जो प्रदेश आर्द्र है, जैसे हैदराबाद, वहाँ सागौन के जंगल हैं। गेहूं, ज्वार और बाजरा यहाँ की उपज है। खेती योग्य भूमि के अधिक भाग में कपास ही पैदा किया जाता है। पठार के इस भाग का मुख्य नगर पूना है। पठार प्रदेश का दक्षिणी भाग सबसे ऊँचा है। इस प्रदेश में पूरा मैसूर, मद्रास के दक्षिणी जिले, बम्बई प्रान्त का धारवार का जिला और हैदराबाद का पूर्वार्द्ध सम्मिलित है। पठार के

धरातल में मुख्य नदियाँ कावेरी और उसकी सहायक नदियाँ हैं। इस प्रदेश में वर्षा बहुत कम होती है और दुर्भिक्ष का सदा डर रहता है। ऊँचा स्थान होने के कारण मैदानी क्षेत्रों की अपेक्षा यहाँ ठंढक रहती है। इस क्षेत्र में खनिज पदार्थ भी मिलते हैं, जिनमें, सोना और मैंगनीज मुख्य है। यह प्रदेश ज्यादा घना बसा नहीं, मुख्य नगर मैसूर तथा बंगलोर हैं।

हैदराबाद के पूर्वार्द्ध को तेलिङ्गाना कहते हैं। मैसूर से यह कम ऊँचा है। यहाँ सिंचाई की मदद से धान पैदा किया जाता है। ज्वार भी पैदा होता है। मुख्य नदियाँ गोदावरी और कृष्णा है।√खनिज पदार्थों में, कोयला, अभ्रक, हीरा तथा सोना यहाँ पाया जाता है। हैदराबाद इस प्रदेश का मुख्य नगर है। हैदराबाद के प्रदेश में संसार के ६० फीसदी अंडी के तेल के बीज पैदा होते हैं।

प्रायद्वीपीय भारत का उत्तरी पूर्वी पठार, पठार का शेष भाग है। इस प्रदेश के अन्तर्गत मध्यप्रान्त का पूर्वार्द्ध जिसमें विन्ध्य प्रदेश के निकटस्थ भाग सम्मिलित है, हैदराबाद, मद्रास तथा उड़ीसा का पठारी भाग आता है। यह पठार पुरानी कड़ी चट्टानों से बना है। यहाँ सब जगह ४०" से ऊपर वर्षा होती है, इसलिये यह दक्षिणी भारत के बड़े पठार के और प्रदेशों की अपेक्षा अधिक आर्द्र है।

इस पठारीय प्रदेश में कृषियोग्य भूमि में धान पैदा किया जाता है। मक्का, ज्वार, बाजरा, तिलहन और दालों की भी खेती होती है। इस प्रदेश के जङ्गलों में लाख अधिक होता है। लोहे, ताँबे तथा मैंगनीज की खानें भी पाई जाती हैं।

लंका

समुद्र में घुसा हुआ भारतवर्ष का ही यह एक भौगोलिक भाग है। समुद्र का उथला अंश अपूर्ण रूप से देश के मुख्य भाग से इसको अलग करता है। परन्तु वह समुद्र भी सेतुबन्ध आदि पहाड़ियों से प्रायः बँध गया है। इस प्रकार प्रकृति ने लंका को भारत के साथ जोड़ रखा है।

प्रश्न और अभ्यास

१—भारवतर्ष को प्राकृतिक विभागों में बाँटिये और प्रत्येक का संक्षेप में वर्णन कीजिये।

२—उत्तर भारत के मैदानों के विभिन्न खंडों का वर्णन संक्षेप में कीजिये।

३—सिंधु घाटी और पंजाब के मैदानों की मुख्य उपज का उल्लेख करते हुए वहाँ के लोगों के रहन-सहन पर इसका प्रभाव दिखलाइये।

४—ब्रह्मपुत्र अथवा आसाम की घाटी की जनसंख्या बढ़ रही है। क्यों ?

५—पूर्वोत्तरीय भारत की चाय की खेती का एक वर्णन लिखिये।

६—विंध्य मेखला ने भारत के उत्तरी और दक्षिणी भाग को किस प्रकार अलग कर रखा है ?

७—दक्षिण के पठार का वर्णन कीजिए तथा वहाँ की मुख्य उपज का उल्लेख करिये।

८—भारत के पूर्वी और पश्चिमी घाटों के मुख्य बन्दरगाहों का नाम लिखें।

—०—

जलवायु

'जलवायु' शब्द जल और वायु (हवा-पानी) से बना है। किसी स्थान के जलवायु का विचार करते समय हम जल अर्थात् वर्षा और वायु अर्थात् हवा के रुख, उसकी नमी और तरी पर ध्यान देंगे। हम इसे भी देखेंगे कि वह स्थान ठंडा है या नहीं, किसी स्थान का जलवायु मुख्यतः निम्नोक्त बातों पर निर्भर रहता है।

(क) विषुवत् रेखा से दूरी—भूमध्य या विषुवत् रेखा पर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं। इसलिये यह स्थान अधिक गरम रहता है। विषुवत् रेखा से जितनी दूर उत्तर या दक्षिण हम चलते

जायेंगे, गर्मी उतनी ही घटती जायगी। पहले ही कहा जा चुका है कि भारत विषुवत् रेखा से दूर नहीं है, कर्क रेखा इसको लगभग दो बराबर भागों में बाँटती है, इसलिये यह देश उष्ण है। अवश्य ही मध्य अफ्रीका की भांति गर्म नहीं है, किन्तु इंग्लैंड से तो अवश्य ही गर्म है। भारत में तापक्रम के वितरण को समझने के लिये हम भारत के कुछ स्थानों के जनवरी के तापक्रम को लेकर उनकी तुलना करें। इस मौसम में सूर्य की किरणें विषुवत् रेखा से दक्षिण के देशों पर सीधी पड़ती हैं। भारत विषुवत रेखा के उत्तर में है, इसलिये सूर्य की किरणें इस पर तिरछी पड़ती हैं और यहाँ जाड़े की ऋतु होती है। यही कारण है कि उत्तरी भारत में दक्षिणी भारत की अपेक्षा ठंड ज्यादा पड़ती है। जुलाई में सूर्य विषुवत रेखा से उत्तर के देशों में सीधा चमकता है, इसलिये इस समय ग्रीष्मऋतु रहती है। और उत्तर भारत दक्षिण की अपेक्षा अधिक गर्म हो जाता है।

(ख) समुद्र से दूरी—पानी मिट्टी की अपेक्षा देर में गर्म या ठंडा होता है। समुद्र तट पर जितने स्थान है उन सब पर जल का यह प्रभाव पड़ता ही है। वे स्थान गर्मी में न तो बहुत गरम होते हैं और न जाड़े में बहुत ठंडे ही। इसलिये पंजाब के समान समतल प्रदेश जो समुद्र से दूर हैं, समुद्र के पास वाले स्थानों से अधिक गर्म हैं। यह स्पष्ट है कि पश्चिमी पंजाब और सिन्ध तथा थार मरुस्थल अत्यधिक शुष्क प्रदेश ज्यादा गरम हो जाते हैं। दक्षिणी भारत का सबसे अधिक उष्ण भाग मद्रास का शुष्कतट है, परन्तु पश्चिमी तट और बंगाल में स्थित आर्द्र प्रदेश कुछ ठंडे हैं।

(ग) समुद्र से धरातल की ऊँचाई—ऊँचाई पर पृथ्वी की गर्मी अधिक नहीं पहुँच पाती और वायु के जिन कणों के सहारे गर्मी पहुँचती है वे भी ऊँचाई पर कम हो जाते हैं। इन्हीं कारणों से से ऊँचे स्थान ठंडे हुआ करते हैं। हिमालय आदि ऊँचे पर्वतों के अधिक ठंडे होने का यही कारण है और इसी वजह से दक्षिणी पठार जितना गर्म होना चाहिये या उतना गर्म नहीं है।

(घ) पर्वतों की दिशा—पर्वतों की दिशा और स्थिति भी जलवायु पर बहुत कुछ प्रभाव डाला करती है। पृथ्वी पर हवा किस दिशा से किस दिशामें चलती है, यह बहुत कुछ पर्वतश्रेणी और नदी की घाटियों पर निर्भर है। दक्षिणी भारत का पठार मानसूनी हवाओं का दो हिस्सा कर देता है। एक भाग जिसे बंगाल का प्रवाह कहते हैं, बंगाल की खाड़ी के उत्तर और गंगा की घाटी के ऊपर बहता है। दूसरा भाग जिसे अरबसागर का प्रवाह कहते हैं अरबसागर पर बहता हुआ पश्चिमी घाट से टकराता है, उत्तरी पूर्वी मानसून की दिशा भी इसी प्रकार पर्वत श्रेणियों द्वारा नियंत्रित होती है।

(ङ) वायु की दिशा—पर्वतों की दिशाओं के साथ-साथ हवाओं की दिशाओं का ज्ञान भी किसी स्थान के जलवायु को जानने के लिये आवश्यक है। भारत में मानसून हवायें मुख्य हैं। भारत में मई और जून में अधिक गर्मी होती है, इसलिये गर्मी में स्थल की वायु गर्म होकर ऊपर उठ जाती है और उसका स्थान लेने के लिये समुद्र की ओर से भाप भरी हुई वायु स्थल की ओर को जाती है। इसीलिये भारत में गर्मी में वर्षा होती है। जाड़े में ठीक इसका उल्टा होता है समुद्र की वायु स्थल भाग के वायु से अधिक गर्म होती है, इसलिये समुद्र की वायु ऊपर की ओर उठ जाती है और स्थल से वायु समुद्र की ओर चलने लगती है। स्थल की ओर से बहने के कारण इसमें शुष्कता रहती है और इसी से उससे वर्षा नहीं होती।

भारत में उत्तरी पूर्वी मानसून अक्टूबर या नवम्बर से चलना आरम्भ होता है और दक्षिणी-पश्चिमी मानसून लगभग जून से चलने लगती है और सितम्बर तक चलती है। उत्तरी पूरवी मानसून भू-भागों से चलती है, इस कारण शुष्क होती है। चूंकि यह उस प्रदेश की ओर बहती है, जो इससे गर्म है, इसलिये जैसे-जैसे यह आगे बढ़ती जाती है और भी शुष्क होती जाती है। परिणाम स्वरूप लगभग पूरे भारतवर्ष में यह हवा सूखी होती है,

परन्तु दक्षिणी पश्चिमी मानसून समुद्र से और गर्म प्रदेश से आती है, इसलिये आर्द्र होती है। इस वायु की दो मुख्य शाखायें हैं। एक दक्षिण पश्चिम की ओर से अरबसागर से चलती है और दूसरी बंगाल की खाड़ी से। अरबसागर से चलने वाली मानसून पश्चिमी घाट पर टकराती हैं और पश्चिमी समुद्र तट पर अच्छी वर्षा होती है। यही हवायें राजस्थान को पार करती हुई हिमालय पर जाकर टकराती हैं। यदि बीच में और कोई पहाड़ होता तो वहीं वर्षा होती, परन्तु पूर्व पश्चिम दिशाओं में और कोई पहाड़ न होने के कारण वे सीधे हिमालय पर जाकर टकराती हैं।

बङ्गाल की खाड़ी से उठनेवाली मानसून पूर्वी हिमालय और आसाम की पहाड़ों पर टकराती हैं और बङ्गाल आसाम और ब्रह्म प्रदेश में घनघोर वर्षा होती है। हिमालय के पहाड़ों को पार न करने के कारण इसकी दिशा बदल जाती है और यह पहाड़ों के समानान्तर ही पश्चिम को चल पड़ती है। इससे उत्तरी बिहार और उत्तर-प्रदेश को वर्षा प्राप्त होती है।

जाड़े में इस वायु की दिशा बदल जाती है और उत्तर पूर्व के स्थल क्षेत्र से समुद्र की ओर चलने लगती है। इसलिये इससे वर्षा नहीं होती। हाँ, मद्रास के पूर्वी भाग में अवश्य कुछ वर्षा हो जाया करती है, क्योंकि बङ्गाल की खाड़ी को पार करते समय यह समुद्र से भाप खींच लेती हैं।

और भी कुछ बातें जलवायु पर प्रभाव डाला करती हैं, जैसे समुद्र की धारायें, जङ्गल का होना या न होना, मिट्टी की बनावट, धरातल का ढाल इत्यादि।

परन्तु भारत की जलवायु पर इनका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। इस प्रकार भारत में मुख्यतः तीन ऋतुयें होती हैं जो क्रम से जाड़ा गर्मी और वर्षा के नाम से विख्यात है।

प्रश्न और अभ्यास

१—भारत में पानी बरसानेवाली हवायें कब और किधर से आती हैं ?

२—भूमध्य रेखा के समीप के स्थान क्यों अधिक गर्म होते हैं ? हिमालय पहाड़ भूमध्य रेखा से बहुत दूर नहीं है फिर भी इसकी चोटियाँ बर्फ से क्यों ढकी रहती हैं ?

३—मानसूनी हवायें क्या हैं, और भारत पर उनका क्या प्रभाव पड़ता है ?

—०—

भारतवासियों का रहन-सहन

यह पहले कहा जा चुका है कि भारतभूमि एक विशाल देश है, जिसके अलग-अलग प्रान्तों में विभिन्न प्रकार का जलवायु है। आदिकाल से ही इसके अलग-अलग खंडों में भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग रहते आये हैं। जीवन और सभ्यता के विकास के साथ-साथ इन लोगों का भी परस्पर संपर्क स्थापित हुआ और इनके संगम से भारतीय जाति बनी। फिर भी भारत के भूखंडों में स्थानीय जातियों की प्रधानता है। आर्यों की मूल भूमि आर्यावर्त है जो हिमालय और विंध्याचल के बीच में है। इसी मध्य देश में आर्यों का अभ्युदय हुआ। द्रविड़ जाति की आदि भूमि सुदूर दक्षिण है। यहाँ से फैलकर यह उत्तर भारत में आर्यों से मिल गये। विंध्य मेखला के जङ्गली पहाड़ी भागों में शबर-पुलिंद जाति रहती है। हिमालय शृंखला के उत्तरी उर्वरा और उत्तर पूर्वी प्रदेशों में किरात (मंगोल) जाति के लोग पाये जाते हैं। इन मुख्य जातियों के अतिरिक्त, विदेशी आक्रमण के फलस्वरूप भी यहाँ की मूलजातियों में मिश्रण पैदा हुआ। भिन्न-भिन्न जातियों की लहर के बाद लहर यहाँ आई और ठहर गई।

बहुधा उन्होंने जिन जातियों को जीता उनके साथ सम्बन्ध स्थापित किया। परिणाम यह हुआ कि भारत-निवासी मिश्रित जाति के हो गये हैं। जिस प्रकार भारतीय प्रजा में जातियों की विविधता है वैसे ही भारतीय भाषाओं में भी भेद है। भिन्न प्रान्तों में भिन्न भाषा बोली जाती है। भारतीय भाषाओं में सबसे अधिक महत्वपूर्ण हिन्दी है। धर्म, जाति तथा भाषा से भी महत्वपूर्ण है। धर्म के ही कारण संपूर्ण भारत में समाज की रचना एक ही प्रकार की पाई जाती है। देश के सभी निवासी वर्ण आश्रम और जाति व्यवस्था को मानते हैं। मुसलिम और ईसाई भी इसके प्रभाव से अछूते नहीं रहे। विवाह, खानपान, शिष्टाचार, आमोद-प्रमोद, उत्सव मेले पर्व आदि भी सारे देश में बहुत मिलते-जुलते हैं।

भारत में सांस्कृतिक एकता होने पर भी, प्राकृतिक बनावट तथा जलवायु की विभिन्नता के कारण यहाँ के विभिन्न प्रान्तों के लोगों के खान-पान तथा रहन-सहन में अन्तर पाया जाता है। हम पहले पढ़ चुके हैं कि (गङ्गा और ब्रह्मपुत्र की घाटियों के निचले भागों में पूर्वी और पश्चिमी तट के मैदानों, पूर्वी पाकिस्तान और ब्रह्मा में विशेष रूप से चावल पैदा होता है।) अतः यहाँ के निवासियों का मुख्य भोजन चावल ही है। गेहूं के लिये उपजाऊ मिट्टी, ठंढी और सूखी जलवायु की आवश्यकता होती है। अधिक वर्षा इसके लिये हानिकारक होती है। पूर्वी पञ्जाब के सूखे प्रदेश इसके लिये अत्यन्त उपयुक्त हैं और यहाँ गेहूं खूब पैदा होता है। गङ्गा और सिन्धु नदी के ऊपरी भाग तथा विन्ध्य और सतपुड़ा के पहाड़ों के उत्तरी ढाल और उनसे उत्तर के मैदानों में गेहूँ की पैदावार अच्छी होती है। इसलिये इस प्रदेश के निवासियों का मुख्य भोजन गेहूं है।

चावल और गेहूं के अतिरिक्त चने, मटर और अन्य प्रकार की दालें, जौ, ज्वार और बाजरा भी यहाँ के लोगों का एक मुख्य भोजन

है, जो गर्म रेगिस्तान और अधिक वर्षा वाले पूर्वी भागों को छोड़ कर प्रायः सभी जगह पैदा होता है। गुड़ और चीनी के लिये यहाँ गन्ने की खेती है। उत्तर प्रदेश और बिहार इसके मुख्य केन्द्र है। तिलहन, मसाले और भिन्न-भिन्न तरकारियाँ भी यहाँ के निवासियों के भोजन का एक मुख्य अंग है, जिनका उत्पादन भी भारत में किया जाता है। चाय और तम्बाकू का भी सेवन लोग करते हैं। चाय की पैदावार ब्रह्मपुत्र की घाटी, दार्जिलिंग, नीलगिरी और ट्रावन्कोर में होती है। तम्बाकू का पौधा गङ्गा की तलहटी के निचले भागों, दक्षिण के पूर्वी तटस्थान, दक्षिणी ब्रह्मा और सौराष्ट्र में पैदा किया जाता है।

जिस प्रकार भारत में पैदा होनेवाली वस्तुयें यहाँ के निवासियों के भोजन की समस्या का निर्णय करती हैं उसी प्रकार यहाँ के उद्योग धन्वे और व्यवसाय यहाँ के लोगों के रहन-सहन को प्रभावित करते हैं। अतः आइये, हम देखें कि भारत में क्या व्यवसाय होता है। हम पहले ही पढ़ चुके हैं कि भारत में अधिकांश मनुष्यों का जीवन खेतों की पैदावार पर ही निर्भर है। यद्यपि यह एक कृषि प्रधान प्रदेश रहा है, फिर भी यहाँ के और औद्योगिक धन्धे बड़े महत्वपूर्ण हैं। खेती पर निर्भर रहनेवाली जनसंख्या लगभग ८६ फी सदी है। जो देहातों में रहती हैं इनका मुख्य काम खेत को जोतना बोना है। रहन-सहन इनका बिल्कुल सादा है। देहातों में ये कच्ची मिट्टी, फूस तथा लकड़ियों के बने झोपड़ों में रहते हैं। ऐसे गाँव भारत के हर प्रदेश में पाये जाते हैं। मनुष्य बड़े मेहनती होते हैं। स्त्रियाँ भी खेतों में काम करती हैं। भारतवर्ष के विशाल जनसमुदाय का केवल १४ प्रतिशत नगरों में रहता है। भारत में ५ लाख गाँव और २००० नगर हैं। परन्तु ये नगर अधिक तर छोटे नगर हैं। केवल ४८ नगर ऐसे हैं जिनकी जनसंख्या एक लाख से ऊपर है। नगरों में मनुष्य पक्के मकानों में रहते हैं। नगरों में सड़कें होती हैं तथा वर्तमान युग के प्रायः वे सभी साधन

उपलब्ध रहते हैं, जो जीवन को सुखप्रद बनाते हैं। नगरों में रहने वाले उद्योग और व्यवसाय में लगे रहते हैं।

भारत के व्यवसाय

भारत का व्यवसाय खेती पर, जंगली उपज पर, खनिज पदार्थों पर तथा पशुओं पर निर्भर है। भारत का एक बड़ा जनसमुदाय भोजन के सामान और कच्चा माल के उत्पादन में लगा है। एक दूसरा समुदाय वह है जो कच्चे माल से सामान तैयार करता है। कच्चे माल से सामान तैयार करने वाले भी दो तरह के लोग हैं। एक वे जो दस्तकारी करते हैं और जहाँ हाथ से चीजें बनती हैं। दूसरे वे मिल कारखाने जहाँ चीजें मशीन से तैयार होती हैं।

भारत की कारीगरी

सूती सामान—देश की सबसे मुख्य कारीगरी सूती कपड़ा बुनना है। कपास भारत में बहुतायत से होता है। यद्यपि बहुत सा कपास बाहर भेज दिया जाता है, परन्तु उपज का आधा भाग देश में ही काम आ जाता है। भारत के कुछ भागों में लगभग प्रत्येक घर में करघे होते हैं। इनपर स्त्रियां अपने लिये साड़ी और आदमियों के लिए धोती बुनती हैं। आजकल तो कपड़े की मिलें ही अधिक महत्वपूर्ण हैं। भारतीय संघ में लगभग ४०० मिले हैं। सूती कपड़ा उत्पादन में प्रमुख चार क्षेत्रों में बम्बई, मद्रास, उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बंगाल के प्रान्त हैं।

जूट—जिस प्रकार बम्बई कपासकी कारीगरी का केन्द्र है उसी प्रकार कलकत्ता जूट की मिलों का केन्द्र है। जैसा कि हम पढ़ चुके हैं कि जूट गंगा के डेल्टा में पैदा होता है। कच्चा जूट का ७५ फीसदी पूर्वी पाकिस्तान में पैदा होता है, परन्तु वहाँ पर कोई जूट की मिल नहीं है। बहुत सा जूट बाहर भेजा जाता है और कलकत्ते के आस-पास की तथा हुगली के तट की मिलों में भी जूट के टाट, बोरे

इत्यादि बनते हैं। खेत की उपज पर निर्भर रहने वाले और उद्योगों में तेल चीनी तम्बाकू और चाय हैं। उत्तरी पश्चिमी भारत में जहाँ गेहूँ की अधिक उपज होती है वहां आटा पीसने की चक्कियां हैं। इसी तरह जहां चावल अधिक होता है वहां चावल छाँटने की मिलें हैं।

खेतों की पैदावार पर निर्भर रहने वाले कुछ व्यवसायों का उल्लेख तो हो चुका। अब देखना है कि वनों से प्राप्त कच्चे माल द्वारा क्या-क्या व्यवसाय होता है। वनों का नाम लेते ही सबसे पहले लकड़ी के व्यवसाय की ओर ध्यान जाता है। वनों से भिन्न प्रकार की लकड़ियां प्राप्त करके उनका उपयोग भारत का एक मुख्य धंधा है। लकड़ी चीरने के कारखानें भारतमें अच्छी संख्या में हैं। लकड़ी के उद्योग पर ही दियासलाई का उद्योग आश्रित है, क्योंकि दियासलाई के लिये चीड़ की लकड़ी की आवश्यकता होती है, जो हिमालय, पश्चिमी घाट और ब्रह्मा में पाई जाती है। भारत में दियासलाई बनाने के ५७ कारखाने हैं। जंगलों की उपज पर कागज का उद्योग भी आश्रित है। कागज की मिलें टीटागढ़, रानीगंज, नैहाटी, डालमियानगर, लखनऊ, सहारनपुर, जगाधरी, पूना, बम्बई, भावनगर, राजमहेन्द्री और ट्रावन्कोर में हैं। लाख भी जंगलों की ही उपज है, जिससे रंग, वार्निश, ग्रामोफोन के रेकार्ड आदि बनते हैं। लाख का भी उद्योग भारत का एक प्रमुख उद्योग है।

बंगाल, आसाम, काश्मीर, मैसूर, मद्रास, और मध्य प्रदेश में शहतूत के पेड़ों पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं, जिनसे रेशम तैयार किया जाता है। बहुत काल से भारत अपने रेशम के लिये प्रसिद्ध है। अब भी प्राचीन नगरों में विशेष प्रकार का रेशम बनता है, परन्तु कपास तथा जूट की अपेक्षा रेशम बहुत कम बनता है। अधिकतर कच्चा रेशम चीन से आता है। बंगाल पंजाब तथा दक्षिण भारत में रेशम पर जरी का काम होता है तथा सारे

उत्तरी भारतमें आगरा, बनारस, अमृतसर, अहमदाबाद, सूरत आदि स्थानों में सुनहरी जरी का काम होता है।

मलाबार और तनासिरम के समुद्री तट पर रबड़ के वृक्ष लगाये जाते हैं। इन वृक्षों के तनों को खुरच खुरच कर उनसे निकले दूध से रबड़ तैयार करते हैं। मैसूर, कुर्ग और मद्रास प्रदेश में चन्दन के वृक्ष पाये जाते हैं। इन वृक्षों की लकड़ी सुगंधित होने के कारण महँगी बिकती है। चन्दन का तेल भी निकाला जाता है। मलाबार और बंगाल में नारियल के पेड़ मिलते हैं। नारियल की गरी से तेल, उसकी जटाओं से चटाइयाँ, रस्सियाँ और झाड़ू इत्यादि वस्तुएँ बनती हैं।

हमने अबतक खेतों और जंगलों से पैदा होने वाली वस्तुओं पर निर्भर रहने वाले कई एक व्यवसायों का उल्लेख किया, अब खनिज पदार्थों पर निर्भर रहने वाले व्यवसायों का भी उल्लेख किया जाता है।

यह स्पष्ट है कि जहाँ खानें हैं वहाँ से लोग खनिज पदार्थों को निकालने तथा उसको शुद्ध रूप में लाने का व्यवसाय करने लग गये हैं। पहले हम लिख चुके हैं कि किस स्थान पर कौन सा खनिज पदार्थ प्राप्य है, यहाँ हम उन व्यवसायों का जिक्र करेंगे जो उन खनिजों पर आश्रित है। चूँकि आधुनिक युग में कोयला एक बहुत ही महत्व की वस्तु है, अतएव इस व्यापार में एक बड़ी तायदाद में लोग काम करते हैं। मिट्टी के तेल, पेट्रोल, वैस्लीन, मोमबत्ती, पैराफीन आदि का व्यवसाय भी खानों की देन है। अनेक प्रकार के धातु जिनमें सोना, चांदी, तांबा, लोहा तथा अन्यान्य पदार्थ सम्मिलित हैं-खानों से पाये जाते हैं और प्रकारान्तर से इनका उपयोग होता है। खानों की वस्तुओं से अनेकों प्रकार के रासायनिक पदार्थ, जैसे सोडा, सिलिकेट, पोटास इत्यादि बनते हैं।

पशुओं पर भी कुछ व्यवसाय निर्भर हैं। भारत में पंजाब, उत्तर-प्रदेश, बीकानेर तथा दक्षिण के पठारी भागों में, सिन्ध बलूचिस्तान में पशु पालन ज्यादा होता है। भेड़ों के पालन से ऊन पर्याप्त मिलता है,

इसलिये इन देशों में ऊन अधिक इकट्ठा किया जाता है। सबसे अच्छा ऊन उत्तर पश्चिम पहाड़ी भागों में होता है जो पाकिस्तान में है। इन स्थानों में ऊनी कालीन और कपड़े हाथ व मशीनों द्वारा बनाये जाते हैं। पशुओं के चमड़े और खाल का भी व्यवसाय होता है। कानपुर, आगरा इत्यादि इसके प्रसिद्ध केन्द्र हैं।

भारत की कारीगरी भी प्रसिद्ध है। सलमें सितारे चांदी तथा धातुओं के काम हाथी दाँत तथा लकड़ी के काम में भारत चातुर्य और निपुणता के लिये प्रसिद्ध है। मिट्टी के बर्तन बनाना, भारत में सब जगह एक घरेलू धन्धा है। मिट्टी के बर्तनों के लिये चुनार प्रसिद्ध है, सीमेन्ट साबुन तथा अन्य उपयोगी वस्तुओं का व्यवसाय भी भारत में होता है।

प्रश्न और अभ्यास

(१) भारतवासियों के रहन-सहन, खान पान पर भौगोलिक स्थिति का क्या प्रभाव पड़ा है ?

(२) भारत में देहाती तथा नागरिक जनसंख्या की विषमता पर प्रकाश डालिये ?

(३) भारत के मुख्य व्यवसाय क्या हैं ?

—o—

भारत का सामान्य भूगोल

भारत के प्राकृतिक विभागों के अन्तर्गत हमने पिछले परिच्छेदों में मोटी-मोटी बातों का उल्लेख कर दिया है। अब हमें केवल भारत के सामान्य भूगोल पर एक नजर डालना है।

भारत की प्राचीन चौहद्दी के अन्दर आनेवाले पर्वत, नदियाँ, मरुस्थल, मैदान, जङ्गल, प्रान्त, नगर, तथा यातायात सम्बन्धी विवरण निम्नोक्त है।

भारत के पहाड़

भारत के उत्तर की ओर हिमालय पर्वत हैं। इसे पर्वतों का राजा मानते हैं। इसमें संसार की कुछ ऊँची चोटियाँ हैं, जैसे एवरेष्ट कंचनचिंगा, धौलगिरि, नंगा, नन्दादेवी, कैलास इत्यादि, जिन पर वर्तमान समय में पर्यटकों द्वारा अभियान कर विजय पाने की चेष्टा की जा रही है। कराकोरम काश्मीर के उत्तर में है। गाडविन आस्टिन या (मौंट के टू) K.२ इसकी एक ऊँची चोटी है। विन्ध्याचल तथा अमरकंटक पर्वत लगभग भारत के बीच में है, पश्चिम में यह सतपुड़ा पर्वत से मिलता है, पूरब में अरावली से जुड़ा हुआ है। अरावली पहाड़ खंभात की खाड़ी से निकलकर उत्तर पूरब की ओर राजस्थान तथा गंगा नदी के बीच में है। आबू इसकी सबसे ऊँची चोटी है। पूर्वी और पश्चिमी घाट की पहाड़ियाँ भारत के पूर्वी और पश्चिमी तट पर स्थित हैं। इसलिये इनका नाम पूर्वी और पश्चिमी घाट पड़ा है। दक्षिण में पूर्वी और पश्चिमी घाट के संगम पर नीलगिरि पर्वत हैं। इसकी मुख्य चोटी दोदाबेटा है। आसाम की पहाड़ियों का जिक्र पिछले पाठों में आपने देखा है।

भारत की नदियाँ

हिमालय पर्वत से निकलनेवाली नदियाँ मुख्यतः गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र सिन्धु आदि हैं। गंगा, गंगोत्री से निकलकर भारतभूमि को सींचती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है। गंगा से निकलनेवाली इसकी मुख्य सहायक नदियाँ यमुना गोमती गंडक हैं।

यमुना यमनोत्री से निकलकर गंगा नदी से प्रयाग में मिल जाती है। यमुना की सहायक नदियाँ बेतवा और चम्बल हैं, जो विन्ध्य पर्वत से निकलकर उत्तर में बहती हुई यमुना से मिलती है। ब्रह्मपुत्र मानसरोवर से निकलकर दक्षिण की ओर मुड़ती हुई गंगा के साथ

बंगाल की खाड़ी में गिरती है। ब्रह्मपुत्र की कई छोटी सहायक नदियाँ हैं, जिनके उल्लेख की आवश्यकता नहीं है। सिन्धु नदी का उद्गम तिब्बत के पठार में है। वहाँ से चलकर एक गहरी घाटी में बहती हुई गिलगिट नदी से मिलती हुई यह दक्षिण की ओर मुड़ती है और पहाड़ों को काटती हुई पञ्जाब के मैदान में उतरती हुई अरबसागर में गिरती है। सिन्ध की पाँच सहायक नदियाँ क्रमशः सतलज, व्यास, रावी, चिनाब और झेलम हैं।

मध्यवर्ती किंचित् दक्षिणी भाग में विन्ध्याचल और सतपुड़ा पर्वत के बीच नर्मदा अमरकंटक की पहाड़ी से निकलकर खंभात की खाड़ी में गिरती है। खंभात की खाड़ी में गिरनेवाली और नदियाँ ताप्ती, साबरमती और माही हैं। दक्षिण भारत की नदियां पश्चिम को ओर बहती हैं। पश्चिमी घाट से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरनेवाली दक्षिण भारत की नदियाँ–महानदी गोदावरी कृष्णा और कावेरी हैं।

भारत के मैदान

भारत में चार समतल मैदान हैं। गङ्गा सिन्धु का मैदान, ब्रह्मपुत्र का मैदान, पूर्वी और पश्चिमी घाट का मैदान है। यह चारो मैदान उपजाऊ हैं। इन मैदानों में खेती होती है और यहाँ वन भी हैं।

भारत की मरुभूमि

सिन्धु तथा गंगा के मैदान के प्रदेश की मरुभूमि थार को राजपूताना का रेगिस्तान कहते हैं। गुजरात में रन-आफ-कच नाम की एक और मरुभूमि है। यह वर्षा में खारे जल से भरती है और गर्मी में सूखकर पुनः रेगिस्तान बन जाती है।

भारत के जंगल

भारत में बहुत से जंगल हैं। हिमालय आसाम अराकान, आदि में सदा बहार वाले वन हैं, दक्षिण और मध्य हिमालय

में पतझड़वाले वन हैं। पूर्वी पंजाब और मध्य भारत सौराष्ट्र में कँटीले जंगल पाये जाते हैं। यहां के जंगलों में सागौन, साल तथा चीड़ की अच्छी लकड़ी पैदा होती है।

उपज खनिज और जीवजन्तु

धान, गेहूँ, जौ, चना, बाजरा, भिन्न प्रकार की दालें, ईख, तिलहन, कपास, जूट, पटुआ, चाय, इत्यादि यहां की मुख्य उपज है। शाक सब्जी और फल की मात्रा भी पर्याप्त है। यहां लगभग हर प्रकार के जीव जन्तु पाये जाते हैं। जंगली हिंस्र पशुओं में शेर, चीता, भालू, हिरन, गैंडा, सूअर, नीलगाय, भेड़िया, तेन्दुआ, साँप आदि हैं। पालतू जानवरों में गाय, भैंस, बकरी, ऊँट, घोड़े, गधे, हाथी, वगैरह हैं। नदियों में भी मगर, घड़ियाल और मछलियाँ, कछुवे खूब पाये जाते हैं। बिहार, बंगाल, मध्यप्रदेशमें कोयला, नागपुर में हीरा, मैसूर में सोना, सिंहभूमि में ताँबा होता है। यहाँ लोहा, मैगनीज, जस्ता, अभ्रक भी होता है। नमक, गंधक, फिटकिरी, रेह, शोरा, सोहागा, इत्यादि भी भारत में होता है।

प्रांत नगर और यातायात

नये विधान के अनुसार भारत को आसाम, पश्चिमी बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, पूर्वी पंजाब, मध्य भारत, उड़ीसा, बम्बई, मद्रास और आन्ध्र में विभाजित किया गया है, जो राज्यपालों द्वारा शासित है। जम्मू, काश्मीर, पेप्सू, राजस्थान, मध्यप्रदेश, सौराष्ट्र, हैदराबाद, मैसूर, ट्रावनकोर और कोचीन राजप्रमुखों द्वारा शासित हैं। अजमेर, भूपाल, विलासपुर, कुर्ग, दिल्ली, हिमांचल प्रदेश, कच्छ, मनीपुर, त्रिपुरा और विन्ध्यप्रदेश, चीफ कमीश्नर द्वारा शासित होते हैं, अन्दमान, नीकोवार केन्द्रीय शासन के अधिकार में है। गोवा, डामन, ड्यू, अभी यूरोपीय उपनिवेश हैं।

भारत के मुख्य नगरों में कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, विजगापट्टम प्रमुख बन्दरगाह है, यहाँ विदेशों से व्यापार होता है। औद्योगिक

नगरों में टाटानगर, अहमदाबाद, पूना, सूरत, शोलापुर, बेलगांव, बड़ौदा, इन्दौर, उज्जैन, नागपुर, कानपुर, जबलपुर, बंगलौर तथा हैदराबाद है। सतारा, टीटागढ़, सहारनपुर कागज के कारखानों के लिये प्रसिद्ध हैं। आगरा, दिल्ली, कानपुर, चमड़ों के कारखानों के लिये मशहूर हैं। बरेली, पटना भी लकड़ी के लिये प्रसिद्ध हैं। बम्बई, जमालपुर, खड़गपुर, झांसी, लखनऊ, अजमेर, गोरखपुर में रेलवे के कारखाने हैं।

काशी, प्रयाग, अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, गया, इत्यादि हिन्दुओं के मुख्य धार्मिक स्थान है। नैनीताल, मंसूरी, शिमला, दार्जिलिंग, उटकमंड वगैरह स्थान उत्तम जलवायु के लिये प्रसिद्ध हैं।

भारत के यातायात

भारत में यातायात के मुख्यतः तीन साधन हैं, नदियां, सड़कें, और रेल। सड़कें कच्ची और पक्की दो प्रकार की हैं। सबसे पुरानी सड़क ग्रैन्डट्रंक रोड हैं, जिसे शेरशाह सूरी ने बनवाया था, जो पाकिस्तान की पश्चिमोत्तार सीमा पेशावर से पूर्व में कलकत्ता तक जाती है। भारत के प्रायः सभी बड़े शहर पक्की सड़कों से मिले हुए हैं। हम भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक केवल सड़कों द्वारा भी जा सकते हैं। ग्रैंडट्रंक रोड के अलावा एक सड़क कलकत्ता से मद्रास को ज़ाती है। दूसरी मद्रास से बम्बई और तीसरी बम्बई से दिल्ली। मद्रास से चलने वाली दो और प्रधान सड़कें हैं, पहली पश्चिमी तट होती हुई कालीकट को जाती है, दूसरी ट्रांवनकोर में स्थित त्रिवेन्द्रम् को। नैनीताल, अल्मोड़ा, अम्बाला, शिमला को भी सड़कें जाती हैं। दो महत्त्वपूर्ण सड़कें श्रीनगर को जाती हैं, एक रावलपिन्डी और दूसरी जम्मू से। भारत में धीरे-धीरे और भी सड़कें बनती चली जा रही हैं। सड़कों पर यातायात का मुख्य साधन मोटर और लारियां हैं।

यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण साधन रेल है। भारत में रेलों का जाल-सा बिछा हुआ है। परन्तु भारत जैसे विशाल देश के लिये यह पर्याप्त नहीं है। भारतीय रेलों को शासन सुविधा के अनुसार विभाजित कर दिया गया है। उत्तरी रेलवे—पंजाब, पटियाला, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, तथा पूर्वी तथा उत्तर पूरबी राजस्थान की प्रमुख रेलवे लाइन है। उत्तरी-पूर्वी रेलवे उत्तरी उत्तरप्रदेश उत्तरी बिहार उत्तरी बंगाल और आसाम प्रदेश की प्रमुख लाइन है। यह आसाम तथा अवध-तिरहुत रेलवे लाइनों को मिलाकर बनाई गई है। पूर्वी रेलवे पूर्वी गंगा के मैदान की मुख्य लाइन है। इसका क्षेत्र मुगल-सराय से पूर्व हुगली तक है। बिहार बंगाल, छोटा नागपुर, पूर्वी मध्यप्रदेश तथा आन्ध्र प्रदेश इसके क्षेत्र हैं। पश्चिमी रेलवे का क्षेत्र प्रमुखतः बम्बई राजस्थान मध्य भारत तथा मध्य प्रदेश है। मध्य रेलवे मध्य भारत, मध्यप्रदेश उत्तरी पूर्वी मद्रास तथा दक्षिणी पश्चिमी उत्तर प्रदेश में चलती है। दक्षिणी रेलवे मद्रास, मैसूर, ट्रांवनकोर, कोचीन, दक्षिणी बम्बई तथा हैदराबाद आदि स्थानों में चलती है।

व्यापारियों के लिये रेलवे यातायात सबसे सस्ता, सुगम और शीघ्र पहुँचने वाला साधन है। इसलिये रेलवे ने अन्य यातायात का स्थान बहुत हद तक ले लिया है।

नदियाँ और नहरों द्वारा यातायात

रेल के होने तथा नदियों के पानी से सिंचाई होने के कारण नदियों का महत्व कम हो गया है, इसके अतिरिक्त दक्षिण भारत की नदियाँ गर्मी में सूख जाया करती हैं। नदी यातायात की सबसे बड़ी उपयोगिता पटना के नीचे गंगा और उसकी सहायक नदियों पर विशेष कर डेल्टा प्रदेश में पाई जाती है। ब्रह्मपुत्र नदी में तथा बड़ी नदियों गोदावरी और महानदी के डेल्टा में भी नदी द्वारा यातायात होता है। पश्चिमी तट के किनारे उत्तरी मलाबार से लेकर ट्रावनकोर तक एक प्रसिद्ध

जलमार्ग है। यहाँ कई प्राकृतिक झीलें हैं। इनको काटकर नहरों से मिला दिया गया है, जिनमें होकर छोटे जहाज और नावें आती जाती हैं। पिछले महायुद्ध के बाद भारत में वायुयान द्वारा भी यातायात की सुविधा मिलने से काफी उन्नति हुई है। वायु मार्ग का प्रयोग करनेमें संसारमें भारत का चौथा स्थान है। खबर इत्यादि भेजने के लिये तार और बेतार के तार का भी प्रयोग हो रहा है। चिट्ठी तथा छोटे पार्सलों के लिये डाक विभाग है और भारत के प्रायः हर नगर और कसबों में डाकखाने हैं।

कुछ ज्ञातव्य बातें

जनसंख्या—सन् १९४१ की जनसंख्या की गिनती के अनुसार भारतवर्ष में कुल लगभग ३९ करोड़ मनुष्य हैं। जिनमें स्थूल रूप से ३२ करोड़ भारतीय संघ में और ७ करोड़ पाकिस्तान में हैं। यह जनसंख्या सारे भारत में बराबर २ नहीं बँटी है। देश के विभिन्न भागों में जलवायु, उपज तथा उद्योग व्यवसाय के अनुसार उनका वितरण हुआ है। अधिकतर लोग निचली भूमि में रहते हैं और पहाड़ी दीवार के उच्च पर्वतों पर बहुत थोड़े मनुष्य रहते हैं।

पाकिस्तान

१५ अगस्त १९४७ को भारत के स्वाधीन होने के साथ साथ भारत की एकता नष्ट हो गई और उसको दो राष्ट्रों में विभाजित कर दिया गया। जहाँ मुसलमान अधिक थे वह भाग पाकिस्तान में सम्मिलित कर दिया और शेष भाग भारत में। पाकिस्तान के दो भाग हैं। (१) पश्चिमी पाकिस्तान—इसमें पश्चिमी पंजाब, उत्तर पश्चिम सीमान्त प्रदेश, सिन्ध बिलोचिस्तान तथा पश्चिमी पंजाब की अन्य छोटी मुसलमानी रियासतें हैं। पूर्वी पाकिस्तान में पूर्वी बंगाल, आसाम में सिलहट के प्रान्त का कुछ दक्षिणी भाग सम्मिलित है। नेपाल, भूटान तथा बर्मा हमारे अन्य पड़ोसी प्रदेश हैं।

दिल्ली

दिल्ली भारतवर्ष की राजधानी है। यह भारतीय संघ में स्थित नगरों में एक श्रेष्ठ नगर है। इसके महत्व का मुख्य कारण इसकी स्थिति है जो कि शासन की दृष्टि से अति उत्तम है। सिन्धु तथा गङ्गा के मैदान के मध्य में स्थित यह उत्तर भारत का एक प्रमुख नगर है। दिल्ली हमेशा से भारत की राजधानी रहती चली आई है।

लखनऊ—उत्तर प्रदेश की राजधानी है। यह अवध के नवाबों की भी राजधानी थी। यह मस्जिदों, महलों और बागों से परिपूर्ण है। यह एक महत्वपूर्ण रेलवे केन्द्र है और यहाँ विश्वविद्यालय भी है। यह शीघ्रता से उन्नति कर रहा है।

प्रश्न और अभ्यास

(१) भारत के यातायात के साधन और उनके उपयोग का वर्णन कीजिये।
(२) भारत की प्रमुख रेलवे लाइनों तथा उनके क्षेत्र का संक्षिप्त वर्णन कीजिये।

—०—

अनुवाद-चन्द्रिका
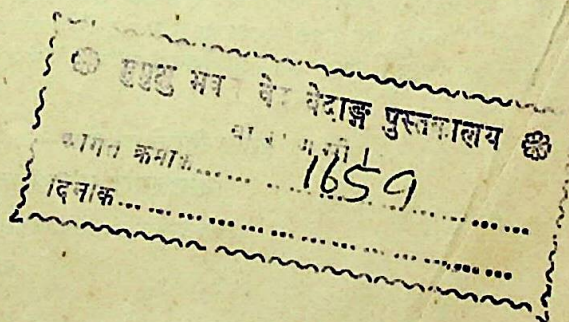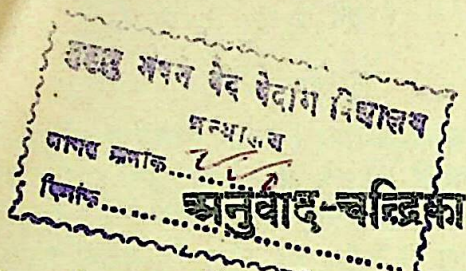
(ले०—पं० चक्रधर 'हंस' नौटियाल, एम०ए०एल०टी० शास्त्री)

यह पुस्तक थमा, हाई स्कूल तथा इंटरमीडियेट कक्षाओं के छात्रों को सरल तथा वैज्ञानिक ढंग से संस्कृत-हिन्दी अनुवाद सिखाने के उद्देश्य से लिखी गई है। इसमें बहुत ही सरल पद्धति द्वारा अनुवाद के मूलभूत नियमों का विवेचन किया गया है। व्याकरण तथा अनुवाद दोनों का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध होने से इस पुस्तक में व्याकरण के नियमों काभी रोचक वर्णन है। आवश्यक शब्द-रूप तथा धातु-रूप भी साथ में दिए हुये है जिससे पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। प्रत्येक पाठ के साथ अनुवादोपयोगी शब्दावली दी हुई है। संस्कृत भाषा से हिन्दी भाषा के अनुवाद करने के लिय संस्कृत-साहित्य में बहुत ही उत्तम तथा उपयुक्त अंशों का संकलन किया गया है जिनके अनुशीलन से विद्यार्थियों को शुद्ध तथा आकर्षक शैली में संस्कृत लिखने का अभ्यास हो सकता है। पुस्तकके अन्त में यू०पी० तथा पंजावकी परीक्षाओं के अनुवाद सम्बन्धी प्रश्नपत्र भी दिए गये हैं, और अन्त में उपयोगी टिप्पणियाँ जोड़कर पुस्तक को विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपादेय बना दिया गया है। इस बार इसमें सरल संस्कृत में निवंध लिखने के तरीके और सरल निवंध भी दिये हैं। आशा है विद्यार्थिगण इससे अवश्य ही लाभ उठायेंगे। नौवां संस्करण भी प्रायः समाप्त है। मूल्य २।।) कमीशन काटकर २) में देते हैं।

पुस्तक मिलने का पता—

मोतीलाल बनारसीदास

पोस्टबक्स नं० ७५, नेपाली खपरा,

बनारस।